श्रीमैथिली विवाह
पदावली
संग्रह्कर्ता
स्व. श्री मैथिलीशरणाचार्य वेदान्ती
संशोधित मूल्य : 30 रुपये

श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः

श्रीमैथिली विवाह पदावली

सम्पादक

स्वामी मैथिलीशरणाचार्य 'वेदान्ती'

प्राप्त स्वर्णपदक

।। श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः ।।

।। श्री युगलप्रियाशरणाय नमः ।।

श्री मैथिली विवाह पदावली

सम्पादकः

रामप्रियाशरण

एम.ए. ''वेदान्ताचार्य''

महन्थ श्रीरसिक शिरोमणि मन्दिर

चिरान्द छपरा, जिला सारण बिहार

महन्थ श्री सद्गुरु निवास गोलाघाट, अयोध्याजी

प्रकाशक/ अधिकारीः

श्री रसिक शिरोमणि मन्दिर

चिरान्द छपरा सारण बिहार

संशोधित एवं परिवर्द्धितः

षष्टम संस्करण, श्रीजानकी नवमी, सन् 2010 ई0

न्यौछावरः 35/– रूपये मात्र

मुद्रक मनीराम प्रिंटिग प्रेस, अयोध्या मो 9935220964, 8957464994

प्रथम संस्करण की

भूमिका

सिय रघुवीर विवाह, जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्ह कहँ सदा उछाह, मंगलायतन राम जस।।

कलि पावनावतार गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी ने श्रीसीताराम विवाह महोत्सव को परम मंगलमय कहा है। जो भक्त श्रीसीताराम विवाह महोत्सव का गान करते हैं उनके पास सदा मंगल होते रहते हैं। श्रीसीतारामजी की अनन्त लीलाओं में विवाह लीला परम मधुर एवं रसमय है। भारतीय संस्कृति का मूर्तरूप श्रीसीताराम विवाह में परिस्फुटित हुआ है। लीलावैचित्री रसवैचित्री से चमत्कृत श्रीसीताराम विवाह रस का अपार सागर है। अनन्त सौन्दर्य माधुर्य निलया श्रीमिथिलेशराजनन्दिनी एवं अपरिगणित कन्दर्पदर्प दलन पटीयान् सौन्दर्य माधुर्य सुधासिन्धु श्रीराघवेन्द्र के असमोर्ध्व माधुर्य का पूर्ण विकास विवाह महोत्सव के अवसर पर दुलहा -दुलहिन के रूप में हुआ है। जिसने दुलहा दुलहिन के रूप में श्रीसीतारामजी का दर्शन नहीं किया, उसका जीवन व्यर्थ है। श्री गोस्वामीजी ने लिखा है-

"दूलह राम सीय दुलही री"

व्याह विभूषन बसन विभूषित,
सखि अवली लखि ठगि सी रही री।
जीवन जनम लाहु लोचन फल,
है इतनोई लह्यो आजु सही री।।

श्रीगोस्वामीजी ने कवितावली में लक्ष्मी, नारायण, गौरी, शंकर, लोमश भुशुण्डि, नारद, हनुमान आदि को साक्षी

देकर कहा है -

बानी बिधि गौरी हर सेसहु गनेस कहीं,
सही भरी लोमस भुसुण्डि बहु बारिखो।
चारि दस भुअन निहारि नर नारि सब,
नारद को परदा न नारद सों पारिखो।
तिन कही जग में जगमगति जोरी एक,
दूजो को कहैया और सुनैया चष चारिखो।
रमा रमा रमन सुजान हनुमान कही,
सीय सी न तीय न पुरुष राम सारिखो।।

विवाह महोत्सव के अपार साहित्य उपलब्ध है। सिद्ध सन्तों के अनेकों पद उपलब्ध है। मिथिला के रसिक भक्तों के अनेकों पद विवाह के सम्बन्ध में गाये जाते हैं, जिनमें श्रीमोदलताजी के पदों का माधुर्य सबसे अधिक है। श्रीअवध के आचार्यों के पद अत्यन्त सरस है, जो कुछ प्रकाशित थे कुछ अप्रकाशित। श्रीसीतारामजी की कृपा से आवश्यक पदों का संग्रह इस पुस्तक में कर दिया गया है। इन पदों का संग्रह श्रीमैथिलीशरण जी ने अत्यन्त परिश्रम से किया है। अतः ये धन्यवाद के पात्र हैं। विवाह रस के रसिक भक्तों को इन पदों द्वारा दुलहा दुलहिन चित-चोर की अनुपम छवि का दर्शन प्राप्त होगा।

अनन्द श्री विभूषित
स्वामी श्रीयुगलानन्यशरण जी
महाराज की जयन्ती
कार्तिक शुक्ल सप्तसी, २०४१

स्वामी श्रीसीतारामशरण

अकारादि क्रम से पद-सूची

श्रीसीतारामजी श्रीजानकी आनन्द

श्री सिया प्यारी के चरण सब आनन्द करण।
श्री मिथिला अवतार लियो जब जनकराज सुखसार भयो तब।
सारे जग में भई खुशियाली, प्रेमी जन मन प्रेम भरन।।
धनुष यज्ञ राजा सब हारे, वीर विहीन भई जग सारे।
रघुनन्दन से मिली नजरिया, तव करि पाय धनुष को खण्डन।।
श्रीमिथिला से जब अवध में आये, बारह वर्ष आनन्द मनाये।
श्रीदशरथजी के यश को बढ़ाकर,पिय संग गये आनन्द मगन मन।।
संत जनन पर कृपा दिखाये, रघुनन्दन के पन को बचाये।
रावण प्रेरि हरन करवाये, राक्षस गण का हुआ विध्वंसन।।
कृपा किये सुग्रीव राज पर बाली का संहार कराये।
किष्किन्धा का राज दिलाये, वानर भये आनन्द मगन मन।।
निशिचर जन संहार कराये, सुरनर मुनि सबही सुख पाये।
राज विभीषण लंका पाये, यश फैली है श्रीरघुनन्दन।।
अवधराज अभिषेक कराकर, तीन लोक में यश फैलाकर।
रामप्रिया हिय महा महोत्सव, प्रेमी जन हिय सुख वर्धन।।

श्री मिथिला मेहमान

श्रीमिथिला के भाग आजु बैठे श्रीजनक अंगनमां।
मिथिला के भाग बैठे सिया के सोहाग बैठे, सखी अनुराग आज बैठे।।
धन धन किशोरी मोरी पयेलऊ सुंदर जोरी, हिया के हुलास आज बैठे।
माथ पै मुकुट सोहे चन्द्रिका अति मन मोहे, सुनैना के प्यार आजु बैठे।।
पियरी विऔहती धोती जामा जरतरिया सोहे, हिया के अनुराग आजु बैठे।
धन धन जनक रैया धन धन सुनैना मईया, नयना के तार आजु बैठै।।
सिया के सोहाग बैठे राम प्रिया भाग बैठे, मधुरी मुसुकान आजु बैठे।

कवित्त -१

श्रीसद्‌गुरू सदन में झूला झूलिक, सरयू किनारे में ठाढ़ छै।
देखि रहन छे सरयू धार के, मन्द मन्द मुसुकाई छै।
झांकी सुन्दर सरयू किनार पर,सखियन के दिलदार छै।
रामप्रिया के जीवन धन छै, सवहक प्राणधार छै।।

कवित्त -२

सरयू किनारे में ठार सखि, .अधि झांकी सुन्दर युगल रूप।
सब देवतन के सरदार सखि,आलिया सब के छथि हृदय भूप।।
नयना हितकर छैन कटार सखि, झांकी सुन्दर अति अनूप।
छथि राम प्रिया के हृदय हार, करुणा सागर हिनकर सरूप।

कवित्त -३

सरयू लहरिया पिया निरखै छै, आनन्द के भरमार छै।
कोटिन सखी सहचरी संग में,करती जयजय कार छै।।
आनन्द मगन दुलहा निरखै छै, श्री सरयू के धार छै।
रामप्रिया दोऊन के ऊपर बार बार बलिहार छै।।

कवित्त -४

माथ में मुकुट कान में कुण्डल, नाशा मणि कमाल छै।
मणिमय सेहरा झिलमिल करै छै, मुख में मधुर मुसुकान छै,
अंग चमकै छै मनमुसकै छै, नयना तिरछी तकान छै।
दन्तावलि चमकै छै सुन्दर, रामप्रिया के प्राण अधार छै।।

कवित्त -५

तिरछी तकान पाहुन के, नयन में बान्धल कटार जकां।
हिय वेधि रहल छै अलियां के, बरछी भाला तलवार जकां।
दुलहा के केहन नयन वाण, सखियां वेधै जनु काम जकां।
छवि रामप्रिया के हिय के हार, सुख पाल जका मणिभाल जकां।।

।। श्रीमन्मैथिलीमुखचन्द्र चकोराय नमः।।

।। श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः।।

।। श्रीयुगलप्रियाशरणाय नमः।।

श्री मैथिली विवाह पदावली

वन्दौं गुरु परमेस जिनकी महिमा को कहै।
थके गनेस महेस सारद सेष रमेस युत।।
जिनके पद नख प्रभा से हृदय सुहोत प्रकास।।
नसत तिमिर सूझत हिये सिय पिय रहस विलास।
वन्दौं श्रीचन्द्रकला अली सकल सखिन सिरमौर।।
कृपा दृष्टि करिये हिये सूझै रहस हलोर।
वन्दौं श्रीचारुशिलादि अली रूप गुनन की खान।
करुनाकरि हिय में बसो उपजाबहु रस ज्ञान।।
वन्दौं श्रीमन्मारुती जिन सम रसिक न आन।
दया दृष्टि मो पै करो दरसावहु रस ज्ञान।।
वन्दौं श्रीमज्जगद्गुरु श्रीरामानन्द महान।
रसिकन पंकज के लिए उदित भानु भगवान।।
श्रीमद्अग्राचाय वर सब रसिकन सिरताज।
रसिक सालि हित मेघ हैं बरसायो रसराज।।
वन्दौं तिनके चरणरज मम धन जीवन प्रान।
निज लघु किंकर जानिके दरसावहु रस ज्ञान।।

Scanned by CamScanner

श्री श्रीतुलसीदासजी भाविक महा उदार।
कलि कुटिल जीव निस्तार हित वाल्मीकि अवतार।
यहौ कहत सकुचत हिये हैं सिय पिय अवतार।
जगद्गुरु विख्यात हैं जिन मानस रचि सार।।
तिनके पद अरविन्द को वन्दौं बारम्बार।
कृपा करो दरसै हिये सिय पिय रहस उदार।।
श्रीनाभा श्रीबालअली श्री मधुराचार्य धुरीन।
श्रीरामसखे हरि रूपसखी श्रीकृपानिवास प्रवीन।।
श्रीरामचरण हरि रसिकअली श्रीयुगलप्रिया रसखान।
श्रीयुगलानन्यप्रपन्नजू रसिकन जीवन प्रान।।
श्रीजानकिवर शरणजू पंडितवर्य महान।
श्रीरामवल्लभाशरणजू और जे रसिक महान।।
वन्दौं सबके पद कमल सदा जोर जुग पानि।
सब मिलिके करिये कृपा लघुतर किंकर जानि।।
रहस चाव दिन दिन बढ़े हरहु अरस अज्ञान।
मम अभिलाष पुराबहु सब मिलि कृपा निधान।।
जय जय जय श्रीजानकी जय जय अवधकिशोर।
जय जय दूलह वेष जू जय रसिकन सिरमौर।।
सीय माण्डवी उर्मिला श्रुतिकीरति वर वाम।
चारि कुँवरि चारिहु रतन तुलसी करत प्रनाम।।

पद–१

नमो श्री अग्रस्वामि पद कुंज।
प्रिय बानी रसिकन मनमोदक बोधक विपुल रास रस मंजु।।
रसिकवर्य मत मण्डन खण्डन असद विषय भ्रम पुंज।।
नमो श्रीजयति जयति प्रमोदवन पिय प्यारी संग रहसि निकुंज।।
नमो श्रीजयति जानकीबल्लभ नाम रसिक रसनावलि गुंज।
प्रीति रीति परतीति लली पद 'युगलप्रिया' हिय तमसि विधुंज।।

श्री मिथिलाजी की महिमा पद–२

परमप्रिय पावन तिरहुत देस।
जहँ जनमी विदेहतनया श्रीसीता मंजुल वेस।
जासों पावन भये रघुनन्दन रघुकुल कमल दिनेस।।
जाग्यवल्क्य गौतम कनादमुनि कौसिक कपिल द्विजेस।
अष्टावक्र व्याससुत शुकमुनि परम शान्त सुचि वेस।।
आय विदेहराज सों पायल ग्यान तत्त्व अनिवेस।
महामहिम बोधायन उदयन वाचस्पति गंगेश।।
शंकर मण्डन गोकुल द्विज जहँ शिवसिंह सदृश नरेश।
मंजुल चंचरीक 'विद्यापति' गुंजत काव्य हमेस।।

पद–३

झिलमिल झिलमिल करे तरेगन मिथिला स्वर्ग महान छै।
सिया धिया छै जै धरती के दुलहा जी श्रीराम छै।।
रंग विरंग पोखरि झाँखरि बाध बौन अनमोल छै।
कमला कोशी गंगा गण्डक चहुँदिशि सलिल अमोल छै।

हरिअर हरिअर पीपरि पाकरि जामुन आम लताम छै।
प्रबल पराक्रम जनक विदेहक विद्यापति केर गान छै।।
वाचस्पति मण्डन शिवसिंहक धरती स्वर्ग महान छै।
स्वच्छ गगन में ज्योति प्रदीपक शरद इजोरिया चान छै।

पद-४

भूमि परम-पावनतम-तिरहुत-श्रीविदेह-विश्रामकी।
जयति जानकी-पद पंकज-रज-रञ्जित-मिथिला धामकी।।
श्रीनृपाल- निमिमहाराज की मातृभूमि श्रीमिथिला।
महीपाल-मिथि-जनकराज-मिथिलेश-मही-श्रीमिथिला।
श्रीसीरध्वज कर्म-योग-विज्ञान-निपुण-निष्कामकी ।। जय.।।
याज्ञवल्क्य-गौतम-कणादकी तपोभूमि-श्रीमिथिला।।
अष्टावक्र-व्याससुत-शुक की सिद्धिभूमि-श्रीमिथिला।
गार्गी-कात्यायनी-सुनयना-सती-भारती-वामकी ।। जय.।।
विश्वामित्र-विभाण्डक ऋषिकी दिव्यभूमि-श्रीमिथिला।
शतानन्द गुरु वाल्मीकि की भव्यभूमि-श्रीमिथिला।
बोधायन-वात्स्यायन-उदयन-श्रीमण्डन-गुण-ग्रामकी ।। जय.।।
भट्टकुमारिल-मदन-अयाची-शंकरशिशु की मिथिला।
श्रीवाचस्पति-सूरकिशोर-प्रयागदास की मिथिला।
कालिदास-विद्यापति-उगना-चन्द्रकवीश्वर नामकी ।। जय.।।
लाङ्गलपद्धति पूर्ण-विदित-भूकर्षण-यज्ञ जहाँ पर।
प्रकटीं दिव्य-सुकन्या-सीता-सालङ्कार जहाँ पर।

लसित-लक्ष्मणा-तीर-सुहावन-सीतामही-सुठामकी ।। जय.।।
धनुषयज्ञ-सुनि-मुनि-सङ्ग-सानुज राम पधारे जनकपुरी।
मार-ताड़का,तार-अहल्या, जन-मन मोहे जनकपुरी।
सोऽपि राम मोहित-निरखत ही सिया-रूप-अनुपामकी।जय.।।
शिव-कोदण्ड-अखण्ड-चण्ड पुनि भञ्जि-भूप-मद-मान-सहित।
परशुराम परितोष, जनक-प्रण पूर्ण किये प्रभु प्रेम-सहित।
उसे उठायीं सिया-सहज ही, शैशव-समय-ललाम की ।। जय.।।
सीताराम-विवाह-विलोकन-विधि-हरि-हर-सुर-सब आयें।
जनकपुरी-लखि,अमरपुरी के अद्भुत-वैभव-विसराये।।
अति-आश्चर्य-चकित-चतुरानन,निज-कृत-कतहुँ न काम की।।
जनकपुरी-मणि-मण्डप-मनहर-रचना-रुचिर न जाय कही।
भूषण-वसन-विअहुती-सज्जित-लज्जित-लखि-रति-मदन सही।
जयति जानकी-"रमण" युगल जोड़ी-छवि-अति-अभिराम की।।

मंगल देवाराधन पद ५

मगल करन गणेशदेव प्रथम मनाइये।
देव श्रीरामलाल दुलहा सियादुलहिन योग सुयोग बनाइये।।
शंकर परम शुभंकर पर शिरनाइये।
देव सिया रघुवर के संयोग सुयोग दिखाइये।।
गोर लागूं गौरि गोसाउनि पग परूं प्रेम से।
देवी श्रीरामलाल दुलहा किशोरि दुलहिनि मोरि के राखो सदा क्षेम से।।
बन्दौं श्रीदिनकर देवा जो काया के नाह हे।
देवा हम कहँ वेगि दिखाइये सियाराम व्याह हे।।

हाथ जोड़ि माँगौं वर नाय माथ दीजिये श्रीरंगनाथ हे।
देव तौ लौं रहै सियाके सोहाग जबै लौ महि अहि माथ हे।।
विनती करौं ग्राम देवा ओ देवी दया करू हे।
देवी सिया रघुवर के संयोग दिखाय आनन्द भरू हे।
देव पितर सन मांगहि 'मोद' विनती करि हे।।
देवा प्रगट असीसहिं मातु लेहि अंचल भरि हे।।

हरदी बुकावन पद - ६

मंगल आजु सुहावन अति मन भावन हे।
जुगल संजोग बढ़ावन हरदी बुकावन हे।।
मिथिला सुख सरसावन रस बरसावन हे।
दम्पति पद दरसावन हरदी बुकावन हे।।
परम प्रीति प्रगटावन लगन लगावन हे।
लाल लली उबटावन हरदी बुकावन हे।।
निरखत जग के छुड़ावन आवन जावन हे।
'मोद' हिये हरषावन हरदी बुकावन हे।।

तिलक चढ़ावन पद - ७

आजु परम परमानन्द सजनी सोभा बरनि न जाय गे माई।
चारों कुमरजी के तिलक चढ़ावन विप्र मण्डली आय गे माई।।
गाइक गोबर अँगना निपावल मोतियन चौक पुराय गे माई।
सजल कलस पर पल्लव दीपक वारि सुमंगल गाय गे माई।।

गनपति गौरि गिरीस ग्रामसुर श्रीरंगदेव मनाय गे माई।
त्रिभुवन तिलकहिं तिलक देत लखि सुरनभ जय जय छाय।।
मुख में पान नयन में काजर सुखमा अति सरसाय गे माई।
प्रमुदित 'मोद' सकल दरसकगन चितवनि चखनि बसाय।।

पद-८

आजु तिलक चढ़ये रघुनन्दन के।
चारों कुँवर बैठे छवि छहरत होत सुमंगल तेहि छन के।।
पीत जनेऊ पीताम्बर धोती पहिरावत सब लालन के।
नारियर पान हरदि दधि दूर्वा द्रव्य भरल कर कंचन के।।
पढ़ि पढ़ि वेदक मन्त्र पुरोहित देलनि रघुकुल चन्दन के।
'स्नेहलता' शुभ तिलक चढ़ावति रचि रचि दशरथनन्दन के।।

धनबट्टी पद -६

मिथिला आजु सुमंगल सजनी घर घर आनन्द छाज।
अवध नृपति के ब्राह्मण अयलनि लगन बांटन केर काज।।
लखितहिं नगर छटा छकि गेलनि मंगल रचनाक साज।।
भेंटि यथोचित आदर कैलथिन शतानन्द महाराज।
मंगल गान सुनावय लगलनि हिलि मिलि सखिन समाज।।
हरदि धान दूबि फेंटि सुबटलनि गह गहि बाजन बाज।।
करि सनमान दान बहु देलथिन निमिवंशिनि शिरताज।।
'मोदलता' मन मुदित समाति न आनन्द उर महँ आज।।

पद-१०

धान बाँटि अवध से आयल गावथि मंगल मिथिलानी।
अवधक कुशल पूछथि हजमासे चतुर नारि छानि छानी।।
कहु कहु हजमा नृप दशरथ के रहन सहन आनि बानी।
केहन हुनक छैनि यश परतिष्ठा बैभव सुख सनमानी।।
सुनि हजमा गद गद भय बाजल कहव कि हम अज्ञानी।
अवध अवधपति के यश वैभव भुवन चारि यश घहरानी।।
सहित सुनयना नारि जनकपुर थिया योग घर वर जानी।
'स्नेहलता' कुल देवक आगा राखल धान हरष मानी।।

मौर रचना -पद-११

मलिया जे सूतल गिरिजा बगिया से मालिन सूतल फुलबारि हे।
उठु-उठु आगे मलिनियाँ मलिया जगावहु दुअरे श्रीरामजी दुलहा ठाढ़ हे।
अनुदिन आरे दुलरुवा अँखियो ना देखल आजु दुअरिया भेल ठाढ़ हे।
बाबा के घर गे मलिन लगन उत्तिम भेल आरसी माउरिया गूथि देहु हे।
आरसी मउरिया दुलहा अँखियो ना देखल आरसी मउरिया कैसन होई हे।
बाबा के घर गे मालिन कोंढ़िला उपजिगेल बेलिया चमेलिया केर फूल हे।
औंठी पौंठी रचिहे गे मालिन मोर रे मयूरवा से बीचै ठैयां सीया सुकुमारि हे।
बाटहिं रीझतै गे मालिन बाट बटोहिया से कुइयाँ पर रीझतै पनिहारि हे।
मड़वा पर रीझतै गे मालिन सारी सरहोजिया से कोहबर में सिया सुकुमारि हे।

कमला पूजन पद -१२

आँचर से झाँपि झाँपि लेल तियगन हे।
चलली सलोनी सिया कमला पूजन हे।।
साजि साजि अंग अंग अपन अपन हे।
चलि भेलीं सिया सखी आनन्द मगन हे।।

धूप दीप माला दूभि तुलसी सुमन हे।
साजि लेल डाला बिच अच्छत चानन हे।।
गावथि सुमङ्गल गीत बाजत बाजन हे।
मुदित 'स्नेहलता' थिया मने मन हे।।

पद -१३

आई कमला पूजन जाथि सिया।।
उमा रमा कमला ब्रह्मानी जिनका सँ सव प्रगटीया।।
से सींता कमला सँ मांगथि श्याम सुन्दर बर पीया।।
सलज भाव सोभथि तियगन में दिव्य कांतिवर कमनीया।
केहि पटतर दय करब प्रसंसा उपमा नहिं कछु कथनीया।।
गावथि गीत सुहागिनी सुन्दरि विप्रवधू अरु सुरतीया।
'स्नेहलता' अनुपम छवि निरखथि रहि रहि उमगए हीया।।

पद-१४

कमला पूजन चलि जाति हे सियचारों बहिनीं,
संग में सुहागिनी सुहाति।।
कनक थारनमां महँ अच्छत चाननमां, गूथी माल सुमनमां,
हरे हरे तुलसी के पात। हे सिय.।।
धूप दीप नैवेद बिबिध फलनमां लै लै बहु पकवनमां,
व्यंजन बनी हैं भाँति भाँति।। हे सिय.।।
लखि लखि सोभासुर बरिसें सुमनमां,होय होय अंग पुलकनमां,
गावैं निमिवंशी गुन ब्रात। हे सिय.।।
चुनि चुनि गावैं गारी, उमगित वर नारी, नाम लै वारी वारी,
'मोद' सुभ औसर सुहात।। हे सिय.।।

पद -१५

सुभग सुआसिनि समदि सुनैनारानी, निज गोतनिन बुलवाई री।।
भूषन वसन संवारि सुता चहुँ, कमला पूजन सिधाई री।।
परमानन्द पूरि सब सहचरि,मधु स्वर पञ्चम गाई री।।
उमा रमा ब्रह्मानि आनि जुरि, मिलि सिय अलि बलि जाई री।।
बाजन बाजहिं अतिहिं सुहावन, शोभा वरनि न जाई री।।
पाँवरे पर परसत पद पंकज, दरसत ललित लुनाई री।।
जाय निकट सिरनाय सबै मिलि, भाव सहित गोहराई री।।
श्री कमला झट प्रगट असीसेउ, जयति जयति जय छाई री।।
चारिउ कुँवरि यथाविधि पूजेउ, मनभावति वर पाई री।।
लै तट माँटि नाइ सिर चली सब, अंकुरी आदि बँटाई री।।
सुरतरु सुमन मुदित सुर वरषहिं, लखि रहस्य तरसाई री।।
'मोद' सबै आनन्द अमाति न, मन बुधि चित न्यवछाई री।।

पद-१६

आइ करथि विधिवत वैदेही पूजन कमला तीर हे।
नारि वृन्द मिलि मंगल गावथि के कहे कतवा भीर हे।।
लोक लाज सँ सकुचित लोचन मुख मण्डल गम्भीर हे।
हिय मन्दिर में रघुबर राजित पुलकित सकल शरीर हे।।
जिनका चरन कमल पर निर्भर जल थल गगन समीर हे।
से सीया कमला से मांगथि दीन जकाँ तकदीर हे।।
बिनय करथि पुनि पुनि कमल सँ तुव जस चहुँजुग थीर हे।
'स्नेहलता' किरपा करु वर दे होथि हमर रघुवीर हे।।

मटकोर पद - १७

आजु सिया लाड़िली के छैन मटकोर,
भेलै मिथिला में शोर।।
घर घर बाजन बजैय घनघोर
सबके हिया में उठय आनन्द हिलोर।।
सजि सजि सखी सब भेली एंक ठौर,
पहिरि पहिरि ऐली जड़ित पटोर।।
मंगल कलश तेल अंकुरी सिंघोर,
कमला पूजन केर वस्तु अथोर।।
साजि साजि हाला डाला लागि गेल छोर,
मंगल गावथि सखी प्रेम विभोर।।
अलिन चकोरी घेरी लेल चहुँओर,
ललीमुख लागै जेना पूनम इजोर।
धन एहि मिथिल जनम भेल मोर,
'पटरानी' सिया के देखब मटकोर।।

पद -१८

चलू चलू हे सहेली मटकोर करैलाऽ।
आहे जुगे जुगे सिया के सोहाग बढ़ैलाऽ।।
अक्षत चन्दन फूलक माला, तुलसी सुमन साजल भरि डाला,
मेवा पकवान नैवेद धरैलाऽ।। चलू.।।
अरुण उदय जकाँ चमके चँगेरा,अँकुरी भरल पर माणिक सिंधोरा,
सिंदुर सोहागिन के माँग भरैलाऽ।।चलू.।।

मणिनक माली में तेल चमेली, हुलसि परसथिन नागरि नवेली,
सात सोहागिन के बीच करैलाऽ।। चलू.।।
लक्ष्मीनिधि भैया लेल सोने के कोदारी,माटीकोर चलला कमला किनारी,
मणिन माँरव पर वेदी भरैलाऽ।चलू.।।
चढ़ल विमान गगन सुर हरषय, सुरतरु सुमन छनहिं छन बरषय,
गावै 'पटरानी' मनमोद भरैलाऽ।। चलू.।।

पद-१९

सब सखियन मिलि चललीं पोखरिया हे सुहावन लागे,
जनक लड़ैती संग सोहाय।।
मंगल कलशा लिहले तेल ओ अंकुरिया हे, मंङ्गल बजवा बजाय।।
मंगल गीत गावे अति मनहरिया हे, सुनि कलकंठ लजाय।।
आनन्द बधावा बाजे बड़ अनमोलिया हे, सुर सब फूल बरसाय।।
'श्रीनिधि' हाथ लिहले मणि के कोदरिया हे, मटिया कोरन चलि जाय।।

पद -२०

सियाजू के छैन मटकोर लखोरी आली,
सब मिलि आनन्द विभोर।।
बड़े भाग से पावल समैया, हरषि बजावहु आनन्द बधैया,
फूल बरसत चहुँओर।।
सब सखियाँ मिलि मंगल गावति, चारों कुँवरि पर
बलि-बलि जावति, बाजन बाजैं घनघोर।।
झाँझ मृदंग बाँसुरी बाजै, चहुँदिशि जय जय आनन्द छाजै,
'श्रीनिधि' नाचत विभोर।।

पद - २१

कहवाँ के पीअर मटिया कहाँ के कोदारि हे,
कहवाँ के सात सोहागिनि माटी कोरे जाइ हे।
कमला के पीअर मटिया सोने के कोदारि हे।।
मिथिला के सात सोहागिनि माँटी कोरे जाइ हे।
माँटी के कोरौनी बाबा किये देब दान हे।।
तोहरा के देवौगे बेटी डाला भरि सोनमां हे।
पहुना के देवौगे बेटी चढ़े लागी घोड़वा हे।।

पद-२२

शीरध्वज बाबा के इहो मटकोरवा मटकोरवा।
सुनैना अम्मा मांटी कोरे जाइ सुहाग के मटिया।।
उठु उठु उठु भल मटिया, भल मटिया तोरा बिनु यज्ञों न होत।।
पहिले धरब हम सीरवा भल सीरवा,तवे रे चउकवा के हेतु।।

पद -२३

आहाँ के हम कौसल्यारानी कोन कोन दीअ गरिया ये।
जिनका सभ केओ हरि कहै छथि अहाँ कहै छी हरिआ ये।।
आहाँक बेटा आहाँक बेटी दूनू बड़ व्यभिचारिया ये।
एक बिना नहिं एक रहै छथि एहन लाग लगरिया ये।।
दूनू प्राणि आहाँ गोर गोरि छी बेटा भेलनि किय करिआ ये।
अही सँ त जानि परैए अछि किछु फेरम फेरिआ ये।
निज जमाय सँ यन्त्र मन्त्र लय चमकैलौं सुत चरिया ये।
शृंगीरिषि जग्य पूरन कैलनि जानइ सब संसरिया ये।।

'मोद' उमगि उमगि कए गावथि अलिअन के महतरिआ ये।
आहाँक भाग धन धन्य कौसल्या धन मोरी गोरी सँवरिया ये।।

पद - २४

रानी कौसल्या अवितथि जखनहिं रानी कैकेयी अवितथि।
जन्म लेमक फल पवितथि जखनहिं रानी सुमित्रा अवितथि।।
जनक महल महँ डेरा करितथि कोमल पलंग ओछवितथि।
तोशक तकिया ललित सजवितथि विविध सुगंध सिंचवितथि।।
षटरस व्यंजन रुचिर बनवितथि थार कटोरि धनवितथि।।
सादर सीरध्वजहिं पववितथि विहँसैत विअनि डोलवितथि।।
प्रीत सहित मुख पान खोअवितथि बसननि अतर लगवितथि।।
सुरंग दोसाल ओढ़ा ओढ़ि सुतितथि सरस प्रेम दरसवितथि।
धैकर करकंजनि परसवितथि 'मोद' सुमुद सरसवितथि।।

हरदी चढ़ावन पद - २५

आजु सियाजू के हरदी मड़ौआ हे सखि घर घर मंगल,
जनक चढ़ावे दूभी तेल।।
कोष जुड़ाये मन आनन्द भराये हे, आनन्द सुनैना रानी भेल।।
हरषि हरषि सखि गावेला मंगलिया हे, लेइ हाथ नारियल बेल।।
जाइ जुड़ाइन सुनैना की ललनिया हे, 'प्रेम' मुदित मन भेल।।

पद -२६

सखि हे हरदी चढ़ाउ सुकुमारी सिया के।
शोभा कहलो ने जाइय आइ जनक धीया के।।

मुख छवि परम गम्भीर लली केर,
मंजु मधुर मृदु कञ्ज कली केर,
मन प्रमुदित अलीगन सब तिया के।। सखी हे.।।
कनक कटोरी शुभ हरदी घोराओल,
मंगल कलश भरि पल्लव धराओल,
सखी वारि देल सोने चउमुख दीया के।। सखि हे.।।
धै दूर्वादल मंगल गाओल,
पहिने जनक बाबा हरदी चढ़ाओल,
सुख अकथ बुझाइय आइ सुनयना हिया के।।सखि हे.।।
उमगि-उमगि सखि हरदी चढ़ाओल,
शुभ शुभ गावि बहु आशिष मनाओल,
सखी'पटरानी' निरखि जुराउ जिया के ।। सखि हे.।।

पद -२७

शुभे शुभे होय चहुँओर सकल मिलि गावथि हे।
मंगल हेतु (अमुक बाबा) हरदी चढ़ावत हे।।
जय जय होत चहुँओर सुयश घहरावत हे।। मंगल.।।
बाजन धुनि घनघोर सु आनन्द बढ़ावत हे।। मंगल.।।
सुख उपजत चहुँओर सुमर सुर बरसत हे।।
मंगल हरदी घोरावल मंगल मंगल हे ।।
छिरकि छिरकि सुख पाओल मंगल मंगल हे।।
छवि लखि प्रेम विभोर जनम फल पावथि हे।।
मंगल हेतु 'श्रीसनेह' बाबा हरदी चढ़ावत हे।।

उबटावन पद - २८

आनन्द आजु महा मिथिलापुर शोभा बरनि न जाइ ए माई।।
चारो दुलहिनि के अंग उबटावन हिलि मिलि स्वासिनि आइ।।
गाई के गोबर अंगना निपावल नगजरि चौकी सजाइ।।
गनपति गौरी मनाय यथोचित चारों कुँअरि बैसाइ।।
कंचन थार फुलेल ओ उबटन सुगंध दसो दिशि छाइ।।
पंच सखी सुभ अंगन उबटहिं मधु स्वर पंचम गाइ।।
तन परसतहिं परा सुख सरसहिं हर्ष न हिये समाइ।।
यह रहस्य लखि सुरतिय तरसहिं बरसहिं सुमन सिहाइ।।
उबटि अमल अंग करि दृग काजर वासित पान पबाइ।।
'मोद' मगन इकटक छवि हेरहिं मन बुधि चित बिसराइ।।

श्री किशोरी जी का चुमावन पद - २६

सिय साँवली को सखियाँ चुमावति हे, मन्द मन्द मुसुकावति हे।
दूबि धान धै धै सुभ अंगनि, तिरछी नजरिया घुमावति हे।।
हैं कि सती कि सची कि सरस्वती विष्णुप्रिया कि रमा रति हे।
डाला परसि डुला सिर सेहरा, दिव्य दमक दमकावति हे।।
'मोद' के हियरा हलकत सजनी, जब तूं हुंमकि दबावति हे।

श्री किशोरी जी की आरती पद-३०

आरती जनकलली की कीजे।
सुबरन थार बारि घृत बाती,तन निज वारि रूप रस पीजे।।
गौर वरन सुन्दर तन शोभा,नख शिख छवि नैननि भरि लीजै।।
सरस माधुरी स्वामिनि मेरी, चरण कमल में चित नित दीजे।।

पद-३१

आरती कीजै जनकलली की, राम मधुप मन कमल कली की।।
रामचन्द्र मुखचन्द चकोरी, अंतर सांवर बाहर गोरी।
सकल सुमंगल सुफल फली की,आरती कीजै जनकलली की।।
पिय दृग मृग जुग बंधन डोरी, पीय प्रेम रस राशि किशोरी।।
पिय मन गति विश्राम थली की, आरती कीजै जनकलली की।।
रूप राशि गुननिधि जग स्वामिनि, प्रेम प्रवीन राम अभिरामिनि।
सरबस धन 'हरिचन्द' अली की, आरती कीजै जनकलली की।।

बारात आगमन

अगवानन्ह जब दीखि बराता। उर आनंद पुलक भर गाता।।
देखि बनाव सहित अगवाना। मुदित बरातिन्ह हने निसाना।।
बरषि सुमन सुर सुन्दरि गावहिं। मुदित देव दुन्दुभी बजावहिं।।

पद- ३२

अवध नगरिया से चलली बरिअतिया हे सुहावन लागे,
जनक नगरिया भैले सोर।।
सब देवतन मिलि चलली बरिअतिया हे, बजवा बजेला घनघोर।।
बजवा सबद सुनि हुलसे मोरा छतिया हे,रोशनी से भइलवा अँजोर।।
परिछन चलली सब सखिया सहेलिया हे,पहिरेलि लहरा पटोर।।
कहत 'रसिकजन' दुलहा के सुरतिया हे, सुफल मनोरथ भैले मोर।।

पद-३३

बिनु रे बदरिया बिजली कहाँ चमकेला।
सखि हे अवध नगरिया से बरात आवेला।।

हथिया के घण्टा घहरात आवेला।
हमरा रामजी के साजल बरात आवेला।।
हाथी घोड़ा ऊँट बलबलात आवेला।।
सखि ताही ऊपर झण्डा फहरात आवेला।।
नालकी ओ पालकी देखात आवेला।
सखि छोटे छोटे दुलहा के जमात आवेला।।

पद-३४

मिथिला में बरियात आइल साज के सखी।
भुलइले ना भुलाई दिनवां आज के सखी।।
बलिहारी जाऊँ सखि साँवली सुरतिया पै,
आइल अकाशवा से चाँद धरतिया पै,
घूँघट खोलि देखु छाँड़ि लोक लाज के सखी।।
मौरिया के जोति रवि शशि के लजावेला,
श्याम गौर दुलहा के जोड़ी अस भावेला,
रतिपति आये संग ऋतुराज के सखी।।
बरसे ललइया सखि लाले लाल ठोरवा से,
झाँकेला कजरवा नयनवाँ के कोरवा से,
चाल देखि लागे लाज बनराज के सखी।
मोहनी मुरतिया पर जे ना लुभाइल,
छवि अनमोल देखि जिया ना जुड़ाइल,
जग में जीवन एहन नाहीं कोने काज के सखी।।

धन्य सिया पाय राम, राम सिया पाइके,
जनक सुनैना धन्य पाइके जमाई के,
'परताप' धन्य सहित समाज के सखी।।

पद-३५

सुनु सुनु सखिया मोरी संग की सहेलिया देखन चलु ना,
रघुबर बरियतिया।।
घोड़वा नचावत आवे डगरि डगरिया से बाँधि लिहले ना,
शिर टेढ़ी रे पगरिया।।
साजि साजि गज रथ तुरंत सवरिया से आई गइले ना,
आजु मिथिला नगरिया।।
कहत 'रसिक' लखि श्याम की सुरतिया सुफल करू ना,
सखि अपनी नजरिया।।

परिछन पद -३६

अवध से अइलन चितचोरवा हे सखी चल वर परिछे।
बाल वृद्ध युवती उठि धउरत करि करि के आपस में शोरवा हे।।
साजि के श्रृंगार सब गहना पहिरल नीमन लहंगा पटोरवा हे।
दही अच्छत गूड़ दउरा में सहित बरतिया लागल कई करोरवा हे।।
हाथी पर साधू सब माला लावले सिर चन्दन कइले बखोरवा हे।
धावल आवत बाजा बजावत नगर के कइलन हड़होरवा हे।।
अवध के लोग खखुआइल अइलन खाए खातिर केरा परोरवा हे।
कहत 'भिखारी' दुलहिन योग दुलहा सांवर सहवलिया गोरवा हे।।

पद - ३७

सुघर दुलहउ के मोहनी मुरतिया हे।
सजनी नयन भरि निरखू सुरतिया हे।।
कंचन मउर सोभे दामिनी सी जोतिया हे।
कानन कुण्डल सोभे गरे गजमोतिया हे।।
जामा जरकसी सोभे डारे पीत धोतिया हे।
चरण महावर सोभे सांवर सुरतिया हे।।
निरखि मगन भइली सारी बरिअतिया हे।
करहु सुफल सब अपनी नजरिया हे।।

पद -३८

अवध नगर से जनकपुर आये दुलहा सुन्दर हे।
मदन मोहन छवि निरखत लिये हिये अन्दर हे।।
अनुपम सोहे सिर मौर सुभूषण पीताम्बर हे।
अलक कुटिल भहुआँ धनु सम कमल नयन सर हे।।
साजि साजि कंचन थार लिये परिछन केरि नारी हे।
आरती उतारेलीं सुनैनारानी बीरी दै दै जादू डारी हे।।
जोगीजन जतन करत हारे बस नाहीं भये हरि हे।
परम सनेह करि 'जन हरिनाथ' ताही बस करि हे।।

पद - ३६

लखो दशरथ कुमार बनरा बने आते हैं।
रंगीले नर्म सखा संग में सुहाते हैं।।

सवारी धूम धाम तुरंगो पर साज सजी।
गयन्द मस्त मन्द मन्द चले आते हैं।
छरी औ छत्र चँवर विजनादिक कर लीन्हें।
अनेक यन्त्र बजत बन्दि सुजस गाते हैं।।
अहै धनभाग सकल मिथिला नगर वासिन की।
विलोकि तन मन धन वारि वारि जाते हैं।।
यही अभिलाष 'मधुपअली' श्रीसियाजू की।
बना रहे सुहाग सुख यही मनाते हैं।।

पद -४०

दुलहा आये दुअरिया ए देखो देखो गोरिया।
घोड़वा चढ़ल दुलहा आये दुअरिया बाजा बजे घन घोरिया।
झुण्ड के झुण्ड आवे हाथी अमरिया,जोड़ी बग्गीघोड़ा घोड़िया।।
हुम हुम हुमकत आवे कहरिया,लिये कारचोवी खड़खड़िया।।
रोशनी से राति लागे दिन दुपहरिया, छूटे रवाइस धराधरिया।।
परिछन करैं साजि सिया महतरिया, प्रेम मगन फिरिफिरिया।।
दै के रूमाल दुलहा हँसे मुख मोरिया,'मोद' पै मारे नजरिया।

पद-४१

आजु मिथिला नगरिया निहाल सखिया,
चारों दुलहा में बड़का कमाल सखिया।
माथे मणि मौरिया कुण्डल सोहे कानवां,
कारे कारे कजरारे जुलुमी नयनवां,
लाले लाल चन्दन चमके ऊँचे भाल सखिया।। चारों।।

साँवर साँवर गोरे गोरे जोड़िया जहान हे,
अँखियाँ ना देखलस ना सुनलस कान हे,
जुग जुग जीवे जोड़ी बेमिसाल सखिया। चारों.।।
गगन मगन आजु मगन धरतिया,
देखि देखि दुलहा के साँवरी सुरतिया,
बाल वृद्ध नर-नारी सब बेहाल सखिया। चारों.।।
जिनका लागी जोगी मुनि जोग जप कइले,
सेही हमरा मिथिला में पाहुन बनके अइले,
इहवाँ लोढ़ा से सेकाई इनकर गाल सखिया।। चारों.।।

पद -४२

पऊरि आये पाहुन परीछे चल री।।
सुनो-सुनो सुवासिनि, दम्पत्ति की उपासिनि, सहेलिनि खवासिनि,
प्रीतम प्रेम प्यासिनि, चलो लेबैं सबै मिलि नयन फल री।।
सम्हारि ले री डलवा, हरदि दूबी दलवा, रही दधी सुमलवा,
सिला सेदेला गलवा, चलो गावो मंगलवा सुकंठ कल री।।
उमा रमा सु भारती, सची हिया उमगावती, दरस को तरसती,
वनाय वेष नर ती, हिलि मिलि के गावैं जावैं बलि बलि री।।
द्वै श्यामल गौरवा, हैं चारो चितचोरवा, जगत शिरमौरवा,
के सोहैं सिरमौरवा, ठगौरी ठौर ठौरवा विलोकु भल री।।
परीछैं सब सासुरी, कि हुलसि हुलासुरी, हैं रोके प्रेम आँसुरी,
हैं होश ना हवासु री, प्रमोद 'मोद' पागी है न परे कल री।।

पद -४३

सुनू यौ बरियतिया आहाँ बहिन बेचिक ऐलौ यौ।
जखने ऐलौं जनकपुर में गाम के घिनौलौं यौ।।
अपने सुन्दर साज सजैलौं पट भूषण झमकैलौं यौ।
घर में घरनी छल तकरा पोसिया लगैलौं यौ।।
अपने चढ़लौं हाथी घोड़ा शंख निशान बजैलौं यौ
'पटरानी' नहिं लाज आहाँ के बहू लूटि करैलौं यौ।।

वर-पूजा पद -४४

हथवा में डलवा लिहले जनक ऋषि ठाढ़ हे।
बैठीं बबुआ पालकी में करीं वर पूजा हे।।
निनियां से भरमल दुलहा पलको ना खोले हे।
बैठीं बबुआ आसन पर करीं वर पूजा हे।
हरदी रंगल चउरा भरीं रउरी अंजुली हे।
पीयर असर्फी से करीं वर पूजा हे।।
दही अच्छत पान टीका वेदवा उचारी हे।
बैठीं बबुआ पालकी में करीं वर पूजा हे ।।

करि पूजा मान्यता बड़ाई। जनवासे कहुँ चले लवाई।।
वसन विचित्र पांवड़े परहीं। देखि धनद धनमद परिहरहीं।।
अति सुन्दर दीन्हेउ जनवासा। जहँ सब कहँ सब भाँति सुपासा।।

जनवासा में स्वागत-गान पद -४५

स्वागत कैसे मनाऊँ पाहुन मेरे घर आये।
श्रद्धा सुमन बिछाऊँ पांवड़े अँसुवन अर्घ चढ़ाऊँ।

नयन कमल मग आनि पाहुन को पुतरिन पलंग बिछाऊँ।।
आजु की घड़ी सखी बेरि बेरि आवे आनन्द उर न समाऊँ।
हम सब कहँ सखि किछुओ न चाहिय छवि पर बलि बलि जाऊँ।।

जनवासा में पद -४६

अइसन दुलहा ना अइलन नगर में।।
मिथिलापुर के नर नारी सब चरचा करत घर घर में।
भाल तिलक कान कुण्डल शोभे मउरी सोभतवा सर में।।
जामा जोड़ा पीताम्बर पहिरले गहना गतर गतर में।
अइसन स्वरूप कहीं देखली ना सुनली सागर समैलन गागर में।।
सियाजू के नाते पाहुन होइ गइलन नाता जुटल छन भर में।
कहत 'भिखारी'अब ना निकलिहन गरिगइलन भीतरी नजर में।।

पद - ४७

देखो देखोरी सब,चारों सुन्दर वर,राजा दशरथ जी के लाल।
चारों कुमरि जोग आनि मिलौलनि, श्रीगौरी शंकर कृपाल।।
सिर पै सुरंगी चीरा तुर्रा कलंगी हीरा, केशर खौर ऊँचे भाल।
अजब अनोखी आँखि कजरा सुरेख रेखी चितवन करत निहाल।।
कुण्डल मनिनजर उलटे कपोल पर, बुलकनि करत कमाल।
जियरा अरूझै लखि औरो न सूझै देखि मुसुकत मुख दै रूमाल।।
अँगुरिन छल्ला छाजै नख शिख रूप राजै, गरवा में गेरे मनिमाल।।
सौंपि सम्पत्ति साज राखैं बिदेहराज,मिथिले इनहिं सब काल।।
प्रेम बढ़ाय चाहे लोन पढ़ाय चाहे, लेवैं बझाय मंत्र जाल।
'मोद' न तो बियोग बौरी हो बिरह रोग, लागत जीवन जवाल।।

पद - ४८

दुलहा निरखू सुनयनी नयन भरू ना।
जुलफ सँवरिया पै मणिन मउरिया न, छहरै मोतिनकी छोरिया न।।
भाल चिकनौरिया पै केशर की खौरिया न, भौंआ धनु पंचसरिया न।।
दाड़िम दतुरिया पै पान अरुणरिया न, 'मोद' हँसनि मधुरिया न।।

पद -४९

आजुक दिवस धन्य थिक सजनी सिया सजन के देखू ये।
लए लए लाभ ललकि लोचन के, जन्म सफल निज लेखू ये।।
मणिन मौर पर जिग्गा लट्टू, तुर्रा कलँगी और सिपेंच।
चमकैये अति चारु चमाचम, सभक आँखि के रखलनि खैंच।।
उच्च भाल पर खौर केशरिया, जोहैते मन मोहै ये।
भृकुटि मरोर छोर अलकन के, गोल गाल पर सोहे ये।।
मन्द हँसनि मृदु मधुर अधर पर, अमी बुन्द वर्षावै ये।
जादू भरल सुजुल्मी जोहनि, युवतिन जिय तरसावै ये।।
एहन धार कर्कस नहिं सजनी, छुरा तमंचा नेजा में।
'मोद' मुग्ध भेलनि दृग लखिते, गरलैन कोर करेजा में।।

पद - ५०

सिय के साँवला बड़ा मन मोहना सखी।
मौर मणिन जड़े तुर्रा कलँगी धरे,
जुल्मी जदुआ भरे जुल्फ जोहना सखी।।
खौर केशर खरे टेढ़ी भृकुटी तरे,
नजरा कजरा परे सौगुन सोहना सखी।।

इनको जो जो जोवैं इनको सो सो होवैं,
क्या करैंगे कबौं 'मोद' पै छोहना सखी।।

पद- ५१

देखू देखू चम्पा बहिना शोभा के बहार ये।
सिया के साजनजी के सुभग शृँगार ये।।
छमकि छावैए छटा मौर छोरदार ये।
मारामारी करै की चाहैए मंजु मार ये।।
गुलफुल गाल पै जुलुफ घुंघुरार ये।
मुसुकनि लखि भूलै शरीर संसार ये।
अपना लड़ैती पर 'मोद' बलिहार ये।
जिनका प्रसादे पौलौं शुभ सरोकार ये।।

पद-५२

कैसा बना है बना की बनन रसिकन जीवन धन।
नैनन ते छवि छूटै न छन।।
ललित महावर चारु चरन, जेहिं चितैं चतुर जन।
कटि में कसे हैं केशरिया वसन।।
जगमग जामा जड़े मणिगन, चारु चदरा तड़ित सन।
गमकैं सुगेन्धे की गजरा गरन।।
पान ललाई लसैं अधरन, मन्द हासी फसै मन।
कजरारे नजरों पै, 'मोद' मगन।।

पद -५३

अँखिअनि आँखे जमकि गई री,चोखी चितवनि चमकि गई री।
सियजू के सँवला दिये सिर समला, मोपै कियो हमला हमकि गइ री।।

ठामें ठमकि गई अंगे थमकि गइ, रोम रोम रौनक रमकि गई री।
बसनै गमकि गई दसनें दमकि गइ 'मोद' पै छूरी छमकि गई री।।

पद-५४

नेकु वारक विलोकु दुलहा ओर सजनी।
दृग मुख छवि चन्द्रमा चकोर सजनी।।
छवि एक ओर मनमथ करोर स.,ताते दुलहा छवि लागे बरजोर।।
छवि निधि धनु भहुँआँ मरोर स.,ताकि नैन सरमारे हिय मोर स.।।
सियवर ये चतुर चितचोर स., लखि बौरी भई सुरत विभोर स.।।
सखे 'योगेश्वर' मानो भानु भोर स.,शिवधनु तोड़े मिथिला में शोर।।
करजोरि मांगो विधि से निहोर स., मिले श्यामल वर नवलकिशोर।।

पद -५५

क्या छवि माधुरी आज बनी देखो सखि नौशेवर का।।
मणिमय मौर शीश पर राजैं, अलक कपोलन आई विराजैं,
राका शशि छवि कोटिहुँ निदरत मुख दुति शोभा धर का।।
कानन कुण्डल मकर मनोहर,मुक्तामाल धरे गर सुन्दर,
पदिक हार युत बन्यो हृदय पर शोभा मणिधर का।।
अरुण अधर पर नाशामणि वर, भाल तिलक शोभे शुभ केशर,
अधर सुधारस हँसन सुबर सर,किरण सुधाकर का।।
पगतल रचित महावर सोहैं, निरखत जो मुनि जन मन मोहैं,
सोइ जाने वारक जो जोहैं,ललित चरणवर का।।
पीत वसन उपवीत अजानकर निज जन मन महँ वसत निरन्तर,
'योगेश्वर' अनुचर का अनुचर बलिहारी वर का।।

पद -५६

आये अवध नगरिया से चार दुलहा।
बनिके मिथिला नगरिया के प्यार दुलहा।।

माथे मणि मौरिया अलक घुंघुरारी,
बड़ी बड़ी अँखियाँ अजब कजरारी,
अंग अंग पै अनंग बलिहार दुलहा ।।

दामिनी की जोतिया लजावेला दसनवां,
चितवा चुराय लेत मधुरी हँसनवाँ,
चारु चिबुक अधर अरुणार दुलहा।।

अस अचरज कहीं दिखे ना सुनाई,
साँवरी मुरतिया के गोरी परछाई,
मति पावे नहिं पार जावे हार दुलहा।।

जदपि सुघर चारों दुलहा लखात बा,
बड़के पहुंनमाँ पर मनवां खिचात बा,
यही प्रेमिन के हिय के पुकार दुलहा।।

वेद ना बतायो नेति-नेति कहि गायो,
हमरे अंगनवाँ पहुनवां बनिके आयो,
'परताप' त्रिभुवन सुख सार दुलहा।।

पद - ५७

सखि हे दुलहा के भरि आँखि देखि लेहु ना।
जइसन पहुना हमार अइसन कतहूँ केहू ना।।

कच घुंघुरारे तापै मौरिया सँवारे,
नयना कजरारे अधर अरुणारे,
भाल तिलक विशाल सोहे बंक भहुँ ना।।

कोटि कोटि चन्द्रमा सुआनन जड़ल बा,
लागता मुरतिया ई अपने गढ़ल बा,
अति सुन्दर अनंग लेकिन अइसन सेहू ना।।

जुगनू के जोतिया हो जाला तब मन्दा,
सोलहों कला से उगे जब नभ चन्दा,
इनकी समता में आवे रवि शशि बहु ना।।

स्वर्ग से सौगुना नीक लागेला धरतिया,
जहवाँ विराजे अस मोहनी मुरतिया,
खोजि हारी कवनो उपमा दीखे दिशि चहुँ ना।।

कइसे कइसे अइलन इहवाँ नेवता ना पतिया,
बनिके 'प्रताप' विश्वामित्र के सँघतिया,
बक्सर वाले बाबाजी को धन्यवाद देहू ना।।

पद- ५८

अवध से आज मिथिला में लुटाने प्यार आये हैं।।
सजे सेहरे में देखो साँवले सरकार आये हैं।।
भ्रमर से काली काली बिखरी घुंघरवाली अलकों पै,
छटा छहराते मौरी की छैल दिलदार आये हैं।।
जमीं का जर्रा जर्रा है नहाया चाँदनी में आज,
कि मिथिलाऽकाश में पूनम के चन्दा चार आये हैं।।

भले दाता जगत के हैं शिरोमणि दानियों में हैं।
ग्रहीता आज बनिके श्रीजनकजू के द्वार आये हैं।।
ऋचाएँ वेदकी 'परताप' जो सुनके अघाते हैं।
वे सुनने रस भरी गारी चले ससुरार आये हैं।।

पद-५६

धन्य धन्य आजु केर अति सुभ दिनवाँ हाय रे सखिया,
रहि रहि जियरा हुलसाय ।।
उमड़ि घुमड़ि घन साँवर आयो, लेहु मन मोरवा नचाय।।
सुन्दर पहुनवाँ के छवि लखि आजु, अब मोहि कछु ना सोहाय।।
कवन सुकृत कइली मइया सुनैना,धिया ऐसन पवली जमाय।।
सियाके सोहाग विधि अचल बनावे, गावत 'करील'उमगाय।।

पद - ६०

कहवाँ से ऐलै मोरा सांवला पहुनमां रे मोरा अँखियाँ नींदो नाहीं।
केकरा लागी सजवै हम भूषनमां रे मोरा अंखियाँ।।
अवध से ऐलैं मोरा सांवला पहुनमां रे मोरा अंखियाँ।
इनके लागी सजवै हम भूषनमां रे मोरा अंखियाँ।।
शान ओ गुमान सब झोंकवै चुल्हनियाँ रे मोरा अंखियाँ।
परवाह नहीं चाहे दुनियां कहे नचनियाँ रे मोरा अंखियाँ।।
दुलहा के रूप देखि भेलियै हम बौरिनियाँ रे मोरा अंखियाँ।
नीको नाहीं लागै घर आंगन मां रे मोरा अंखियाँ नींदो नाहीं।।

दोहा- धेनुधूरि बेला विमल सकल सुमंगल मूल।
विप्रन्ह कहेउ विदेह सन जानि सगुन अनुकूल।।

सुभग सुआसिनि गावहिं गीता। करहि वेदधुनि बिप्र पुनीता।।

मण्डप में मंगल गान-६१

मंगल आजु जनकपुर मंगल मंगल हे।
मंगल तनेऊ बितान गान धुनि मंगल हे।।
मंगल बाजन बाजहिं पुर नभ मंगल हे।
मंगल वस्तु लए साजहिं मिलि सब मंगल हे।
मंगल मंत्र उचारहिं महिसुर मंगल हे।
मंगल तनु धरि धाय उमगि जनु मंगल हे।
मंगल दुलहिनि चारु दुलह चारों मंगल हे।
मंगल ब्याह उछाह 'मोद' प्यारी मंगल हे।।

पद -६२

आजु सियाजू के ब्याह की लगनियाँ ए सखी घर घर मंगल,
बाजन बाजै घनघोर।।
आय बरियात साजि विविध वाहनियाँ ए, रघुकुलमनि सिरमौर।।
सुनि ना परत सखी बतियाँ अपनियाँ ए, जुरे अगवनियाँ अथोर।
लखि बरषावै बहु सुरन सुमनियाँ ए, जयति-२ करैं शोर।।
'मोद' उमगि गावैं प्रेम मगनियाँ ए, छवि छकि-२ तृण तोर।।

पद- ६३

आजु जनकपुर घर-घर मंगल आनन्द अधिक उछाह गे माई।
सजि बरियात सुपुत्र विआहन ऐला अवध के नाह।।
हाट बाट महँ चहल पहल छाएल उमगि सबहिं उर माह।

रानी सुनैना के जाई जुड़ाउनि कैलनि सुखी सब काह।।
चारिउ कुमरि जेहने छथि तेंहने वर चारिहुँ रूप धारि।
जानि परइ जनु चतुर विधाता रचलनि सोचि विचारि।।
हम सब प्रगट भाग्य बस भेलहुँ मिथिला अम्बाक गोद।
कोहवर वैसि सरस सुख लूटब प्रमुदित 'मोद' विनोद।।

स्वस्ति वाचन

ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।।
स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु।।१।।
द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ग्वं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ग्वं
शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्ति रेधिः।।२।।

धुरछक पद - ६४

धुरछक की कलशा लयके चललीं सुआसिनि ए रसप्रीती माती,
सजि लीनी सोरहो शृँङ्गार ।।
पीत रंग सारी अंग सुवरनधारी ए., भाल लाली सिन्दुर सँभार।।
मांगलिक बाजन की गति पै पग धारे ए., गान तान लाजें सुर नार।।
मंगल सुनाती उमगाती लखे आती ए, रघुवंशिन सरदार।।
भरि भरि डलवा असरफी लए दीनी ए,मोद चलीं गावति जै जैकार।।

पद- ६५

सुन्दरि नवेली ठाढ़ि धुरछक गावथि हे सुहावन लागे,
सोने के कलशिया तेल माथ।।

आनन्द बधावा बाजें नृप जनवासा हे सु.,
दशरथ विराजथि सुत के साथ।।
सुनल अवधपति दुलहा के स्वागत हे सु.,
कलशा में देल मानिक सात।।
तखन वशिष्ठ मुनि देल अनुशासन हे सु.,
करु जाय सिया के सनाथ।।
गुरु के 'स्नेह मय' सुनि वर वचना हे सु.,
चारु भाई चलन रघुनाथ ।।

पद - ६६

रंग बरसे हो रंग बरसे, जनवासा में रंग बरसे।।
देखि देखि मन ललचे, गुरुजी के मन सरसे।।
बाबुजी के मन हरषे,चारु दुलहा के मन ललचे।।
विप्रन के मन विहँसे, सन्तन के मन सरसे।।
भक्तन के मन हरषे, उमड़ि उमड़ि घर बरसे।।

पद - ६७

निमि रघुकुल दोउ सरदार विधाता खूब रचे।।
इत अवधेश सब राजन में राजा उत मिथिलेश उदार।
इत चारों दुलहा अति सुकुमार हैं, उत चारों दुलहिनि सुकुमारि।।
इत वशिष्ठ सब गुन के आगर, उत शतानन्द होशियार।
इत बरियतिया सब रसिक सरदार है, उत करें स्वागत सतकार।।

आज्ञा मंजूरी पद -६८

समधी जी से विनय हमारी। गुरू बाबा से विनय हमारी।।

चारु दुलहा से विनय हमारी। सब विप्रन से विनय हमारी।।
सब सन्तन से विनय हमारी। बरियतिया से विनय हमारी।।
उहाँ कंचन की है अटारी। इहाँ झोपड़ी है दो चारी।।
उहाँ सुवरन की है थारी। इहाँ केदली के पात सम्हारी।।
उहाँ कंचन की है झारी। इहाँ तुम्बा कमण्डल कठारी।।
उहाँ मेवा मिसरी मिठाई। इहाँ भाजी अनोन बिचारी।।

कन्या निरीक्षण पद -६६

एही वर भैंसुरा के कइसे देऊँ गारी हे।
भूषन बसन लायो बहुत सँवारी हे।।
मांगटीका शीशफूल नथ जुत भारी हे।
झुलनी झमकदार नासामणि प्यारी हे।।
कर्णफूल कुण्डल झुमक दुति न्यारी हे।
कण्ठा गोप सतलरी हँसुली हजारी हे।।
दुलहिन जोग लायो सुन्दर मनहारी हे।
चन्द्रहार हैकल करत उजियारी हे।।
बाजूबन्द बिजली सुझव्वा झलकारी हे।
किंकिन कमरकस सुन्दर पेटारी हे।
कड़ा छड़ा पायजेब पैजनी सुठारी हे।।
सारी देखो मोतियन झालर किनारी हे।।
कनक सिन्होरा जामें लाल सेन्दुर धारी हे।
'रामा' देखि मुदित सकल नरनारी हे।।

पद -७०

नथिया ले गुरहथिया ए भैंसुर नथिया हउवे मँगनि के।
दुलहा हउबे सोनारे के बेटा बबुई हैं निमिराज के।।
सरिया ले गुरहथिया ए भैंसुर सरिया हउवे मँगनि के।
दुलहा हउवे माड़वारी के बेटा बबुई हैं निमिराज के।।
लहँगा ले गुरहथिया ए भैंसुर लहँगा हउवे मँगनि के।
दुलहा हउवे बजाजे के बेटा बबुई हैं निमिराज के।।
सिन्होरा ले गुरहथिया ए भैंसुर सिन्होरा हउवे मँगनि के।
दुलहा हउवे सिन्दुरहारे के बेटा बबुई हैं निमिराज के।।
ताग पाट ले गुरहथिया ए भैंसुर ताग पाट हउवे मँगनि के।
दुलहा हउवे पटवारी के बेटा बबुई हैं निमिराज के।।

दो.- सजि आरती अनेक विधि मंगल सकल सँवारि।
चली मुदित परिछनि करन गजगामिनि वर नारि।।

छं.- को जान केहि आनन्द बंस सब ब्रह्म वर परिछन चली।
कल गान मधुर निसान वरषहिं सुमन सुर सोभा भली।।
आनन्द कंद बिलोकि दूलह सकल हिय हरषित भई।
अंभोज अंबक अंबु उमगि सुअंग पुलकावलि छई।।

दो.- जो सुख भा सिय मातु मन देखि राम वर बेष।
सो न सकहिं कहि कलप सत सहस सारदा सेष।

पद -७१

घोड़वा छमकावत आवै सांवला पहुनमां, देखु. सहेलिया मोरी हे,
मौरिया की अजब बहार।।

ऊँचे रे लिलरवा पर लटकैं लट घुंघुररवा देखु.,

जुलुमी नयनमां कजरार।।

चिकने कपोलवा पर कुण्डल करैं किलोलवा देखु,

ओठवा अनुठवा अरुणार।।

बुलकनि की हुलकनि लखि लखि हुलसेला मोरा छतिया देखु,

मुसुकनि बनावेला बेकार।।

'मोद' न रुकिहैं संग रहि रैन दिन विलोकिहैं देखु,

लोक लाज कुल कानि छार।।

पद - ७२

रघुनन्दन आवहीं विलोकु सखियो।
नजरवाली अपनी नजर सम्हार रखियो।।
जादू वाली अपनी जदुआ सम्हार रखियो।। टोना.।।
माथे मनि मौरवा विलोकु सखियो।। जा.न.।। टो.।।
केशर की खौरवा विलोकु सखियो ।। जा.न.।। टो.।।
नयननि कजरवा विलोकु सखियो।। जा.न.।। टो.।।
जुलुमी नजरवा विलोकु सखियो।। जा.न.।। टो.।।
कुण्डल हलनमां विलोकु सखियो ।। जा.न.।। टो.।।
मंजु नासामनमां विलोकु सखियो ।। जा.न.।। टो.।।
श्याम गौर जोड़वा विलोकु सखियो ।। जा.न.।। टो.।।
'मोद' चितचोरवा विलोकु सखियो ।। जा.न.।। टो.।।

पद -७३

सियाप्यारी के सजन दूजे मार, आकी दुलहा के वेष में शृंगार।।
काम एक धनु पाँचवान वार, इनके अंग अंग दिव्य हथियार।।
काम धावत फिरत पद चार, इतो चंचल तुरंग असवार।।
भृकुटी भाल तिलक सम्हार, साजे धनुपर विशिष सुधार।।
बाँके नयना मदभरे रतनार, चितवनियाँ बरछी कटार।।
कान कुण्डल ढाल झलकार, फाँसिबेको जाल जुलुफ पसार।।
अधराधर सोहैं अरुनार, तामें विहँसनि तीखी तलवार।।
कोई बचै चाहे छिपे अँधियार,नासामोती दुति करे उजियार।।
आवे कतल करत नर नारि, नहिं थमत हटत बरियार।।
जनि डरू 'नेहशीला' हुशियार, हिनको से बली लाड़िली हमार।।

पद-७४

देखो देखो देखो सखी सांवला पहुनमां हे।
जिनका देखैते सखी मोहि जात मनमां हे।।
मिथिला की असही दुसही डारइ ना कहीं टोनमां हे।
ताते सहेली झटसे दै दे दीठोनमां हे।।
घोड़वा गुमान भरे करइ फनफनमां हे।
जौहर जड़ित जीन जेवर झनझनमां हे।।
झुकि झुकि चुचुकारैं झूलैं मौरन छोरनमां हे।।
मानो दिव्य घन पर नाचैं विज्जुगनमां हे।।
भाल विशाल पर तीन रेखनमां हे।
मनहुं जनावइ तीनू लोक ना अइसनमां हे।।

भौहें कमनिया सखिया नैना चोखे बनमां हे।
मन मृग आपे आय होत कतलनमां हे।
गोल गोल गाल पर डोलइ अलकनमां हे।
मानो झुकि झुकि पूछइ केहि मन ठेकनमां हे।।
मुसुकनि मद पीके डोलइ वौरी बुलकनमां हे।
बोलिया अमोलिया करइ अंग अंग पुलकनमां हे।
मलवा अलवेलवा झुकि झुकि देवइ सिखवनमां हे।
आओ आओ शरणियाँ इनके चाहो यदि कल्यनमां हे।
जनके हित करते-करते बाढ़ल कर कमलनमां हे।
अँखियाँ में रहते रहते श्याम भये रंगनमां हे।।
धन धन किशोरी मोरी जिन लागी ललनमां हे।
आपहीं आय बने मिथिला मेहमनमां हे।।
जुग जुग जीवइ सखिया दुलहिन दुलहनमां हे।
'मोद' मंगल गावइ वरषइ सुमनमां हे।।

मण्डप गमन पद - ७५

उतर जावैं यहीं लालन चलें पैदल लली आंगन।
यहाँ से हो गमन पैदल चलें पैदल लली आंगन।।
अवध से आये मिथिला में कहाँ थी पालकी उस दिन।
न ठगिये की धनी हम हैं चलें पैदल लली आंगन।।
सवारी आपके जितने बराती लोग आये हैं।
सभी हैं गैर से मंगनी चलें पैदल लली आंगन।।

चले आते सभी पैदल शरम की बात ही क्या है।
समझ ही गये समझ वाले चलें पैदल लली आँगन।।
ललन मुनि 'स्नेह' मय चुटकी उतर गये पालकी तजकर।
मसल होने लगे उस दम चलें पैदल लली आँगन।।

पद-७६

सम्हारियो हें कहुँ नजरी न लागे।
अरिछि परिछि रानी कहति सखिन से उतरियो हे कहुँ डोलने न पावे।
हरकि हरकिचुल हमरे ललाजी से देखियो हे कोई बोलने न पावे।
सिद्धिजी आगे निज अँचरा विछावे कहें लाल जी यह फटने न पावे।।
फाटी जो अँचरा हमारी कहीं तो बहिनियाँ तोर कहीं बिकने न पावे।
चन्द्रकला कहें भौजी हमारी सम्हारियो हे 'प्रेम' मोहने न पावे।।

पद - ७७

हेयौ पाहुन सम्हरि चलू अँगना में।
ई जनि बूझू अवधक आँगन, आहाँ आयल छी मिथिला में।।
श्रीमिथिलापति केर आँगन अछि, देखनुक चकमक बनल मणिन गछि।
आँगनक शोभा कोना कहव जहाँ, विधियो भुलाइ छथि रचना में।।
एम्हर ओम्हर जौं डेग बढ़ायब, तखने अवधक नाम हँसायब,
माय बहिन किछुओ नै सिखौलनि,बाप देलनि मुनि मँगना में।।
सरहोजि सारि निहारि रहल छथि,आहाँक परीक्षक वैहे बनल छथि,
चालि चलन केर जाँच होयत जौं, सियाजू देखती कँगना में।।
लोक बीध एकउ नहिं छोड़ब, प्रश्नक उत्तर नीक उचारब,
'पटरानी' सब गुनक खानि, दुलहिन भेटती मुँह बजना में।।

पद -७८

एकटा बात हमर कने सूनि लिय, ई विधि कए आगाँ पैर दिय।
अइठामक ई विधिक प्रसिद्धि अछि, माय बहिनि के नाम लिय।।
पित सँ सौगुन माए अधिक छथि, अपनहुँ देखु विचारि हिय।।
बिना नाम जनने जननी के, गौती कोना गितगाइन तिय।।
'मोद'मन्द हँसि कहलनि मधु स्वर, ताकि तिरछि मुसुकाथि सिय।।

पद -७९

रतन जड़ाव के कील लागत हे, पहिरि चलल दुलहा राम हे।
सोने के रचल,रूपे के रचल,पाँवरि हे।।
नयन कजरवा मुंहमाँ पान सोभे हे,जुलुमी जुलुफिया घुंघुरारि हे।
माई अलि गइली, माई वलि गइली सुरतिया देखि के हे।।
कमल नयनमां कजरार हे, माई अलि गइली, माई बलि गइली,
चितबनियाँ देखि के हे।।
ओठवा अनुठवा अरूणार हे, माई अलि गइली,
माई बलि गइली मुसुकनियाँ देखि के हे।।
मोतिया के जोतिया उजियार हे माई अलि गइली,
माई बलि गइली बुलकनियाँ देखि के हे।।
गरवा में कण्ठा उपरा चपकन सोभे हे, हाथ में धनुहियाँ लिहले
ठाढ़ हे, अलवेलवा राजा, मतबलवा राजा, अवधवा वाला हे।
हाथ में रूमलिया लिहले ठाढ़ हे, मुँह पोछल जाला,
कुछ सोचत जाला, खुरफतिया दुलहा हे।।

चरण महावर उपरा पियरी धोती हे, सखिया कलशवा लिहले ठाढ़ हे, माई बीकि गइली,बिकाई गइली, अवधवा जायब हे।।

पद -८०

चलु धीरे धीरे लालन लली के अँगना।
ई अँगना जनि बूझू अवध के, दौड़ल चलब मन मानत जेना।।
कंचनके गचपर मरकत कियारी, गमला सजल सोभे हीरा पना।।
बेली-चमेली-गुलाब-गुलदाउदी, लाखों किसिम के फुलायलहीना।।
रहति बसंत सदा मिथिला में, तीसों दिवस बारहो महीना।।
मध्य सतह मणिमण्डप राजित ,तीन लोक में उपमा बिना।।
'स्नेहलता' लखि कुमर सराहथि, केवल अँगनमां के ई रचना।।

पद -८१

रघुवर धीरे धीरे चलिये लली की गलियाँ।
लखु खिलि रही कामिनी कुमुद कलियाँ।।
मुखचन्द की चकोरिका चखनि अलियाँ।
छवि छाकने दे छीने क्यों छयल छलियाँ।।
नोखे नयननि नुकीले सुधि बुधि दलिया।
फल पाइहौ किये का लखि सिय ललिया।।
मन्द मन्द हँसि हेरैं गुनि भाव भलिया।
'मोद' तन मन वारैं होय बलि बलिया।।

पद -८२

आबू आबू आबू दुलहा अंगना हमार हे।

अगना में होयत दुलहा विधि सब तोहार हे।।
एना किय चलै छी दुलहा सासुजी के घर हे।
सासु सब हँसि देती चालि देखि तोहर हे।।
नहुँ नहुँ चलू दुलहा छोरू डेग नम्हर हे।
सरहज दुलारी लेती नाक पकरि हे।।
चुनि-चुनि सखियाँ सब पढ़ लगलनि गारि हे।
चलहु न सिखौलकनि दुलहा के बहिनी छिनारि हे।।
सारी के गारी सुनि हँसे चारू वर हे।
रीझल 'कनकलता' दुलहा ऊपर हे।।

पद -८३

रघुवंशी रसिया रसहिं रसे। चलिये मण्डप सुख रस सरसे।।
धरत चरण पांवड़े करिवर से, क्या जननी जनमान्य करि से।।
लालन सुनि चले डेग नम्हर से, जाय मनहुँ बाजी वर से।।
चारों कुमर भये ठाढ़ अटर से, जनु गरलाय भये गिरिवर से।।
'मोद' हारि हँसि गवने ठहरसे, मुखनि रुमाल दिये कर से।।

पद-८४

आबू आबू आबू सखि देखु भरि नयना दुलहा श्यामला,
मुखवा पर धैने छथि रूमाल।।
चानन ललाट शोभे माथे,मणि मौरिया दू.,
जुलुमी जुलुफिया घुंघुराल।।
सुन्दरी धियाके जोग सुन्दर सलोना दु.,
जोड़ी विधि रचल कमाल।।

एहन जमाय पावि धनि आई मिथिला दु.,
धनि धनि जनक भुआल।।
निरखि 'स्नेहलता' गावे एहो झाँकी दु.,
आजु भेल जीवन निहाल।।

पद -८५

रानी ए ! रामजी अएलनि पहुनमां किछु आदरो करिऔन ना।
सादर सविधि सँवारि के प्रेमासन धरिऔन ना।।
सुचि जल पगतल धोय के, अंचल पद पोछिऔन ना।
ललकि ललकि मुख जोहि कै राइ लोन निहुछिऔन ना।।
मेवा मधुर मँगाय के अति हित अरपीऔन ना।
पुनि परम मिष्ट स्वादिष्ट विमल कमला जल दीऔन ना।।
नख शिख भूषण साजिकै आँखि काजर लगविऔन ना।
भाल तिलक भरपूर कै मुख पान पवविऔन ना।
जानि पुत्र निज प्रेम सँ परिछन करि लीऔन ना।।
पुलकित 'मोद' विनोद सँ आशिष दय दीऔन ना।
नयन नीरु हटि मंगल जानी। परिछन करहिं मुदितमन रानी।।

पद-८६

आपन सासु परिछन अइली राम रसिया, दुलहा निरेखत अइली।।
पितिया सासु परिछन अइली राम रसिया,घुघवा लटकवले अइलीं।।
अजिया सासु परिछन अइलीं राम रसिया, लोढ़वा घुमावत अइली।।
उपरोहितिन सासु परिछन अइलीं राम रसिया, दूर्वादल निछावर कइलीं
पंडिताइन सासु परिछन अइलीं राम रसिया, वेद मंत्र उच्चारत अइलीं।।

पद -८७

आनन्द आनन्द आजु शुभे हो। पूरण भये मन काजु शुभे हो।।
देखु दूलह रघुनन्द शुभे हो। सबहिन को सुखकन्द शुभे हो।।
रसिक जनन कहँ प्रान शुभे हो। सुखमा शील निधान शुभे हो।
दूर्वाक्षत न्यौछारू शुभे हो। दृष्टि सुधारि निहारु शुभे हो।।
दधि केशर दिअ भाल शुभे हो। सुख लूटिअ अलि माल शुभे हो।।
नील दिठौना लगाऊ शुभे हो। राई लवण न्यौछाऊ शुभे हो।।
अंजन आँजिय आँखि शुभे हो। चितवनि लियहिय राखि शुभे हो।।
बीड़ा सरस पवाऊ शुभे हो। अतर सुघ्रान कराऊ शुभे हो।।
सिलवन सेदिय गाल शुभे हो। लखि लखि होई निहाल शुभे हो।।
धन्य सिया सुख धाम शुभे हो। धन्य ई मिथिला ग्राम शुभे हो।।
जिन प्रसाद हम वाम शुभे हो। पाय घरहिं घनश्याम शुभे हो।
लए चलु आँगन मांहिं शुभे हो। चारों सुघर वर काहिं शुभे हो।
'मोद' छकी चली सँग शुभे हो। उमगित पुलकित अंग शुभे हो।

आरती पद -८८

सखि हे आरती उतारु रघुनन्दन दुलहा के।।
हीरा के हार मौर लर मोती हे, चपकन चारु बियहुती धोती हे।
देखु चरण महावर कर कंगन दुलहा के।। सखि.।।
नयन कजरवा अलक घुंघुराली काली,
कानवाँ में कुण्डल सोहे ओठवा पै पान के लाली,
चमके लिलरा पै लाल लाल चन्दन दुलहा के।। सखि.।।

मन्द मुसुकान भौंह तिरछी कमान हे,
जाकी कोई उपमा ना सकल जहान हे,
कोटि काम छवि बारौं अंग अंगन दुलहा के।।सखि.।।
धन्य धन्य मिथिला के सुकृत महान हे,
लाड़िली कृपा से पवलीं अइसन मेहमान हे,
अइसन बाँधू नाहीं खुले गठबन्धन दुलहा के।।सखि.।।

पद-८९

सब मिलि आरती हे उतारु, सखि हे अवध से ऐला प्रिय पाहुन।।
माई हे सुरभी गैया केर गोबर, घर घर अंगना हे निपाउ।
गजमोती चौक हे पुराउ, सोने के कलशा हे धराउ, सखि हे ओही रे,
कलशवा के ऊपर, माणिक दीयरा के जराउ, सुन्दर आसन हे लगाउ,
तेहि पर दुलहा के बैसाउ, सखि हे आजु प्रीतम घर पाहुन।।
कमला जल हे मँगाउ, दुलहा के चरण हे धुलाउ,
निरखि नयन हे जुड़ाउ, सब मिलि हिय में बैसाउ,
सखि हे आजु पूरन मन कामना।।
षट्रस भोजन हे मँगाउ, राम लखन के हे पवाउ,
सुन्दर चँवर हे डुलाउ, बीरा पानक पवाउ,
सखि हे मिथिला की नारी गुण आगरी।।
पंच सबद धुनि मंगल गाना । पट पांवड़े परहिं विधि नाना।।
करि आरती अरघ तिन्ह दीन्हा। राम गमन मण्डप तब कीन्हा।।

पद-९०

अलवेलो दुलहा रघुनन्दन देखत ही सब के मन बसि गये।।

कुसुमी पाग मौर शिर सोहैं, कज्जल नयन पान मुख लसि गये।
घुँघुरारी अलकें लटके शिर, पीत दुपट्टा पै मन बसि गये।।
पीताम्बर शुभ कटि में राजे, चरण महावर मोतियन गसि गये।
'द्विज' दुनियाँ मणि यह छवि निरखे, सो सो प्रेम के फन्दा में फँसि गये।।

पद -६१

राजकुमर वर चार री सखियाँ छवि लखि ले।।
माथे मणिन की मौर मनोहर, झलकत झालरदार री,
दीठोना निरख ले।
भाल विशाल केशर दधि अक्षत, कमल नयन कजरार री,
चितवनि अमि चख ले।।
ललित कपोल कलित कल कुण्डल, बुलकनि हुलनि बहार री,
हेरि हीय हरख ले।।
रूप यही सखि नयननि को फल, नाम इनहिं के सार री,
जपि जीह परख ले।।
सीय कृपा यह 'मोद' मिले तोहि, रघुवर प्राण अधार री,
अब आँखों में रख ले।।

मण्डप परिक्रमा -पद-६२

सुख लीजै सुख लेबैया सुखसार आप आ गये।
मिथिलेश आँगने में है चार आप आ गये।।
चारों के गर में चादर लक्ष्मीनिधि धय सादर।
सत फेर फिराते ही सर्वत्र साफ छा गये।।

मण्डप पर दुलहिन का आगमन

समउ विलोकि बशिष्ट बोलाए। सादर सतानन्द सुनि आए।।
बेगि कुँवरि अब आनहु जाई। चले मुदित मुनि आयसु पाई।।
सीय सँवारि समाजु बनाई। मुदित मंडपहिं चलीं लवाई।।

छं.- चलिल्याइ सीतहिं सखी सादर सजि सुमंगल भामिनी।
नव सप्त साजे सुन्दरी सब मत्त कुञ्जर गामिनी।।
कलगान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं।
मंजीर नूपुर कलित कंकन ताल गति बर बाजहिं।।

दो.- सोहति वनिता वृन्द महँ, महज सुहावनि सीय।
छवि ललनागन मध्य जनु, सुषमा तिय कमनीय ।।

सिय सुन्दरता वरनि न जाई। लघु मति बहुत मनोहरताई।।

पद-६५

सिय मुखचन्द छवि छाई चहुँओर हे।
प्रेम सिन्धु अंगना में उठत हिलोर हे।।
बिबुध बिबुधतिय देखि भेलि भोर हे।
मिथिला के वासी सब आनन्द विभोर हे।।
जदपि मदन सन अवधकिशोर हे।
तदपि किशोरी मुख निरखि चकोर हे।।
कहथि 'स्नेहलता' दुहुँ करजोर हे।
आबू सिया हिया बिच हमर निहोर हे।।

जिसका है सब पसारा जो सारहूँ को सारा।
सो प्रेम बस विचारा कर सार के बँधा गये।।
अलियाँ उमंगि गावैं आगे रानी रंग गिरावैं।
सुर सुमन वृष्टि लावैं मन भाइ 'मोद' पा गये।।

चौ.- एहि विधि राम मण्डपहिं आए। अरघ देइ आसन बैठाए।।

दुलहा के द्वारा कन्या निरीक्षण पद -६३

देल कमल कर पल्लव आमक पल्लव हे।
चिन्हू बाबू चिन्हू धनि आपन देखु जनि भूलव हे।।
रघुकुल के एक रीति तकर सुधि राखव हे।
हरथि नहीं पर नारि से अखनहिं जानव हे।।
चारु ललन चख चंचल चित करइ डगमग हे।।
आइ असल थिक जाँच नृपति घर तिय लग हे।।
यद्यपि चारु कुमार कुलक पति राखल हे।
सखि सब देल हहार ललन कहि हारल हे।।
'स्नेहलता' हँसि कहल सतत हारि जायब हे।
मिथिलापुरी के व्यवहार पार नहिं पायब हे।।

पद - ६४

आहाँ चीन्हू यौ दुलहा अपन कनियाँ।
वाम दहिन भए वैसलि सुन्दरि, एकै पटोरतर दुई जनियाँ।।

'स्नेहलता' किय चित के चोरौलनि भोगथु अपन चित चोरी के फल।।

पद -६८

काँचहि सूत केरि डोरिया दुलरुआ बन्हाओल हे।
बिनु रे जतन चारु रतन अबुध तिय पाओल हे।।
मणिमय़ मूसर ललित कर कनक ऊखरि देल हे।
झमकि झमाझम छवि रस सजनि झहरि गेल हे।।
आठे चोटे चारो चितचोर बनाओल चाऊर हे।
लखि कर कंगन भेल सब नेह रस बाऊर हे।।
द्विजगन वेद उचार करय सब जय जय हे।
चितय सुन्दर वर जाहि पर सुधिबुधि बिसरय हे।।
आनन्द उमगि 'करील' अठौंगर गाओल हे।
निगम अगम सुख साज सुगम करि पाओल हे।।

पद-६६

चितचोरवा आजु बन्हौलनि ए, सब शान गुमान गमौलनि ए।।
ई चितचोरवा के सिरमनि मौरवा, छोरवा छवि छहरौलनि ए।।
ई चितचोरवा के चोखी दृगकोरवा, पार करेजवा के कैलनि ए।।
ई चितचोरवा के लालीलाली ठोरवा, मन मोरवा के भर-मौलनि ए।।
चोरवा के आठो अंग बान्हू कसिडोरवा, उधम अथोरवा मचौलनि ए।।
सोने के ऊखरवा मणिन के मुसरवा, आठे चोटे चउरवा बनौलनि ए।।
सेहेरे चउरवा बन्हाय शुभ करवा, सिय प्यारी बरबा कहौलनि ए।।
चोरवा के भाग्य पर 'मोद' बलिहरवा, शुभ अठौङ्गरवा गौलनि ए।

पद–६६

हमर अपने किशोरी छथि सुन्दर एहन।
नहिं पायब कतहुँ हेरू चौदह भुवन।।
हिनका संग में पाहुनजी लगै छथि केहन।
जेना राति इजोरिया में नील गगन।।
हिनका देखिते पाहुँनजी मोहैला एहन।
भूलि गेला अवधपुर के मंगल भवन।।
सखि हे मन मुसुकाइ छथि नृपति सुवन।
रूप लखिते भेलनि मन आनन्द मगन।।
'पटरानी' सखी के सुफल भेल जीवन।
कहाँ पवितहुँ एहन अनमोल रतन।।
एहि विधि सीय मण्डपहिं आई।
प्रमुदित सांति पढ़हिं मुनिराई।।
तेहि अवसर कर विधि व्यवहारू।
दुहुँ कुलगुरु सब कीन्ह अचारू।।

अठौङ्गर पद –६७

अनका कहल किय अयला महल चारु लालन के पूछियौन हे।
बान्हू सखी कसि बन्धन प्रबल कसि लालन के बन्हियौन हे।।
मिथिला में घूमि घूमि टेढ़ो देखौलनि आइये घुसरतैन्ह शेखी सकल।।
चौदह भुवन जे अनका बन्हैछथि बूझथु कतेक मैथिलानी में बल।।
बान्हि तखन दिऔन ऊखर मुसरवा आठ चोट गनि कूटथि।
सम्हलि आइ धनमां कुटवियौन हे।।

पद–१००

सरसो के कली सिया जोति महान हे,
तीसी फूल, रंग दुलहा सोहान हे।
हियरा दिअटिया में नेहिया चुआन हे,
रस रस, प्रान बतिया जरान हे।।
छवि माधुरि रस झहरि झहरान हे,
भींजि भींजि, सब सखियाँ नहान हे।।
सब जग भरत अन्हरिया महान हे,
मोर अँगना, उगल चार चार चान हे।।
जेकरा लागी जोगी मुनि बनमें धरे ध्यान हे,
सोई प्रभु, मोरा अँगना कूटे धान हे।।
पाओल 'करील' ऐसन मेहमान हे,
अब किछू, नहिं हिया अरमान हे।।

पद –१०१

मिथिला के नतवा से बढ़ि गेलै शान रे।
हमरा नै चहिय पाहुन जोग जप ध्यान रे।।
मिथिला जनम भेल सुकृत महान रे।
लाड़िली कृपा सँ पैलों आहाँ सन मेहमान रे।।
जिनकी कृपा से छूटै त्रिगुन महान रे।
तिनका के कैलों हम गाँठि से बंधान रे।।
हमरा नै चाहिए पाहुँन धनुष अरु बान रे।
हमरा तो चाहिए पाहुँन मन्द मुसुकान रे।।

विश्वम्भर छथि विदित जहान रे।
लाड़िली के अँगना में कूटै छथि धान रे।।

दुलहिनक नहछू पद - १०२

नहछू करत लखि नाउनी नवेली सुरतिय तरसै लगलनि,
निरखि नाउनी के सुभाग।।
सिय पदकंज चूमि आनन्द में झूमि, हिय अति हरषै लगलनि,
उमगि उमगि अनुराग।।
लखि नख छीलनि सुललित नहरनी, सुरगन बरषै लगलनि,
सुरतरु सुमन सुहाग।।
सरस सनेह काछि रंगि रंग रंगलनि पगतल परसय लगलनि,
दिय नेग निज पिय लाग।।
लाड़िली सुरुख लखि मगन नउनियाँ सबके दरसय लगलनि,
रोम रोम 'मोद' प्रेम पाग।।

पद-१०३

जखने सिया के पग छुअल नउनियाँ हे जै.जै कहु सिया के,
लछमी विराजे हजमा द्वार।।
एक दुई तीनि चारि नव नख छीले हे जै., नवमणि से भरल भण्डार।।
अन्तिम सुनख छीलि सिया मुख ताके हे जै., मनि घर सोने के देवार।।
बहुरि सुनैना दिसि निरखे नउनियाँ हे जै., देल दसलखवा गरके हार।।
मुदित 'सनेह' भरि घर गेल नउनियाँ हे जै., दुअरे पर झूलैं गज हजार।।

दुलहाक नहछू-पद-१०४

हे यो पाहुन कृपा कएक चरण पंकज कनेक दीय।
ललित नख छीलि दुर्लभ लाभ शुभ लोचन के हम लीय।।

हमर महतीनि के कन्या परमधन्या सिया भेली।
जनिक परसाद सँ अपनहुँ जुड़ा रहलौं सबहिं जीय।।
धनुष के टूक कैलौं बात से कछु मन में जनि राखी।
अनायासहिं ऐली उठवैत बालहिंपन सँ श्रीसीय।।
नृपति छथि गोर अपने श्याम से चरचा शहर भरि में।
कहै छथि सब कहू कोना कहैत सकुचाइत अछि जीय।।
नहछु के नेग में सरकार एतवै दिय दयालू होय।
नाऊ संग में बसथि शान्ती वो हम भरि 'मोद' संग पीय।।

पद -१०५

नौह काटू नउनियाँ सुमंगल घड़ी।
तोहरा देवउक हम मणिक मुनरिका, हजमा के देव कर कंचन छड़ी।।
पद पंकज लै निज करतल में, निरखे नउनियाँ नजर गहरी।
कोमल कमल सन लालन के अंग अंग, कोमल कोमल सुन्दर अँगुरी।।
या पद रज किमि तारे अहल्या, येहि पद में कोन जादू भरी।
'स्नेहलता' नख लागे नहरनी धन धन नउनियाँ जनम तोहरी।।

पद -१०६

चरण सरोज धरि मचले नउनियाँ सुनु हे राघोजी,
दिय किछु नहछु कराई।।
हमरा नै चाही किछु साड़ी चूड़ी आँगी सुनु हे राघोजी,
नहिं चाहीं कंचल बिदाई।।
शृंगी संगे शान्ता सुख बहुत उठौलनि सुनु हे राघोजी,
चाही आव नौवा से सगाइ।।

बूढ़ दशरथजी के तीन पटरानी सुनु के राघो जी,
हजमा के एको न उपाइ।।
मांगथि 'सनेहलता' चतुर नउनियाँ सुनु हे राघोजी,
मन में बिचारू चारू भाई।।

पद -१०७

नउनियाँ के हाथे कनक नहरनी वदन निरेखे दुलहा राम के।
हमतोही पुछिले रामचन्दर दुलहा साँचे बोल बात हे।।
काहे बड़का दुलहा साँवर सँझिला दुलहा गोर हे।
काहे मंझिला दुलहा साँवर चुलबुलवा दुलहा गोर हे।।
ई सुनि बोल ले शत्रुहन दुलहा नउनियाँ सुनु बात हे।
काहे मरद तोर साँवर ते काहे गोर हे।
नोह काटु नोह काटु नाउनि अंगुरी जनि काटु हे।
सुनि मृदु बचन नउनियाँ हँसत मुँह मोर हे।।

पद-१०८

एहन स्वरूप कहाँ पौलौं अलबेला यो अवधेशी छैला,
हेरिते हरै ए हमर प्राण।।
काजर कएल आँखि जुलुम करैए यो. मोरैए मदन मन मान।।
जुलफक फाँस में फसौलौं पुरवासी यो., गाँसी मारि मन्द मुसुकान।।
स्वामिनी सियाके संग मिथिले निबसियौ यो., 'मोद' उर एहे अरमान।।

देव पूजा

छन्द- आचारु करि गुरु गौरि गनपति मुदित विप्र पुजावहीं।

सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं असीस अति सुख पावहीं।।
मधुपर्क मंगल द्रव्य जो जेहि समय मुनिमन महुँ चहैं।
भरे कनक कोपर कलस सो तब लिएहिं परिचारक रहैं।।
कुलरीति प्रीति समेत रवि कहि देत सब सादर कियो।
एहि भाँति देव पुजाइ सीतहिं सुभग सिंहासन दियो।।
सिय राम अवलोकनि परसपर प्रेम काहु न लखि परै।
मन बुद्धि वर वानी अगोचर प्रगट कवि कैसे करै।।
दो.- होम समय तनु धरि अनल अतिहित आहुति लेहिं।
विप्र वेष धरि वेद सब कहि विवाह विधि देहिं।।

दुलहा का चरण प्रक्षालन

बर विलोकि दंपति अनुरागे,पाय पुनीत पखारन लागे।
लागे पखारन पाय पंकज प्रेमतन पुलकावली।
नभ नगर गान निसान जय धुनि उमगि जनु चहुंदिशि चली।।
जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव विराजहिं।
जे सकृत सुमिरत विमलता मन सकल कलिमन भाजहीं।।
जे परसि मुनि वनिता लही गति रही जो पातक मई।
मकरन्द जिन्हको संभु सिर सुचिता अवधि सुर वरनई।।
करि मधुप मुनिमन जोगिजन जे सेइ अभिमत गति लहैं।
ते पद पखारत भाग्य भाजन जनक जय जय सब कहैं।।
वर कुँवरि करतल जोरि शाखोच्चार दोउ कुलगुरु करैं।

शाखोच्चारः वर पक्षे

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः जामातृ दक्षिण करोपरि कन्या
दक्षिण करन्निधाय शाखोच्चारः कर्त्तव्यः।

सुरुचिरजलदाभं भावनाभावगम्यं
कनकनिकरभास्वज्जानकीवामभागम्।
स्मितशुचिमुखकान्तं कामिनी कामकारं
वर हृदय सरोजे नौमि रासेश्वरन्तम्।।

स्वस्ति श्रीशरदिन्दुविन्दुमन्दमन्दार वृन्दारक शृँगार स्यन्दस्यन्द-वंद्यवन्दारुमारस्फारस्फूर्ति फलकालकावलीक तिलकालभालार्द्रदीप्तद्युति व्याप्त पर्याप्त पटलीक सन्निहित संविदा धारैक वर्तुलाकार कमनीय कपोल देदीप्यमान स्वच्छ प्रत्यक्ष लक्ष्यलक्षण विलक्षणादर्शकृतकरणावतंस द्वैफणीशदोरंसान्तराल लुलितलुण्ठनासक्त शक्ति खराशुँ विशितांशु ब्रह्माण्डभाण्डोदरी चञ्चलचमत्कार शाल्युन्मिलिता दक्षाक्षिघूर्णिताऽघटघटना पटीयो मनुमहाराजाधिराजहंसवंशावतंश मतिमत्सततसुखापारपारावार धराधरोत्तु ङ्गरसाधार मधुर धुरन्धर नर नटवर नागरतर कविगुरुगणपदविफण्युपम मायापति रतिपति चक्षुर्झषझखमारण मृगकञ्जखञ्जखञ्जननिरंजनाञ्जनाम्बलीढाम्बकाऽऽनुकोश कटाक्षाश्रयोपयुक्तानुरक्त भक्तभूपालेन्द्र कोशलेन्द्रमणि रामनामाभिराम गुणगृणत्कण्ठितानन्दकन्दामन्द पद द्वन्द्वाब्जं विजयतेतराम्।

अव्यक्त प्रभवो ब्रह्मा शाश्वतो नित्य अव्ययः।
तस्मान्मरीचिः संजज्ञे मरीचेः कश्यपः सुतः।।

विंवस्वान्कश्यपाजज्ञे मनुर्वैंवस्वतः स्मृतः।
मनुः प्रजापतिः पूर्वमिक्ष्वाकुश्च मनोः सुतः।।
इक्ष्वाकोस्तु सुतः श्रीमान्कुक्षिरित्येव विश्रुतः।
कुक्षेरथात्मजः श्रीमान्विकुक्षिरुपद्यत।।
विकुक्षेस्तु महातेजा बाणःपुत्रः प्रतापवान्।।
बाणस्यतु महातेजा अनरण्यः प्रतापवान्।
अनरण्यात्पृथुर्जज्ञे त्रिशंकुस्तु पृथोः सुतः।
त्रिशंकोरभवत्पुत्रो धुन्धुमारो महायशाः।
धुन्धुमारान्महातेजा युवनाश्वो व्यजायत।
युवनाश्वसुतश्चासीन्मान्धाता पृथिवीपतिः।।
मान्धातुस्तु सुतः श्रीमान्सुसन्धिरुदपद्यत।
सुसन्धेरपि पुत्रौ द्वौ ध्रुवसन्धिः प्रसेनजित्।।
यशस्वी ध्रुवसन्धेस्तु भरतो नाम नामतः।
भरतात्तु महातेजा असितो नाम जातवान्।।
द्वे चास्य भार्ये गर्भिण्यौ वभूवतुरिति श्रुतिः।
एका गर्भविनाशार्थं सपत्न्यैं सगरं ददौ।।
सपत्न्या तु गरस्तस्यै दत्तो गर्भजिघांसया।
सह तेन गरेणैव संजातः सगरोऽभवत्।।
सगरस्यासमञ्जस्तु असमञ्जादथांशुमान्।
दिलीपोंऽशुमतः पुत्रो दिलीपस्य भगीरथः।
भगीरथात्ककुत्स्थश्च ककुत्स्थस्य रघुः सुतः।
रघोस्तु पुत्रस्तेजस्वी प्रवृद्धः पुरुषादकः।।

कल्माषपादोऽप्यभवत्तस्माज्जातस्तु शंखणः।
सुदर्शनः शंखणस्य अग्निवर्णः सुदर्शनात्॥
शीघ्रगस्त्वग्निवर्णस्य शीघ्रगस्य मरुः सुतः।
मरोः प्रशुश्रुकस्त्वासीदम्बरीषः प्रशुश्रुकात्॥
अम्बरीषस्य पुत्रोऽभून्नहुषः पृथिवीपतिः।
नहुषस्य ययातिश्च नाभागस्तु ययातिजः॥
नाभागस्य बभूवाजो अजात् दशरथोऽभवत्।

तस्यपुत्रः सुठि माधुर्यमूर्ति सौम्य श्रीरामचन्द्रः, राशिनाम हिरण्यनाभ इति।

सूर्यवंशावतंस सच्चिदानन्दघन परात्परपूर्णब्रह्म परेश समस्त लोक लोचनाभिराम सुखधाम परमोदार परब्रह्म परमात्मा।

स्वस्ति श्रीमत्सकल जगदघध्वंसन परमोदार विनोदविचार सदाचार सच्छास्त्राध्ययन विद्वज्जनगोष्ठीप्रकाश वशिष्ठगोत्र वाशिष्ठैक प्रवर श्रीमन्नाभागवर्मणः प्रपौत्रः १, श्रीमदजवर्मणः पौत्रः २, श्रीमद्दशरथवर्मणःपुत्र ३,. प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये। स्वस्ति सुवासोभूषयोर्वरकन्ययोर्मंगलमास्ताम्। इति वर पक्षे वारत्रयं पठेत्॥

अथ कन्या पक्षे

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

जयति जनकजायाः पादपद्मं मनोज्ञं
हरिहर विधिवंद्यं साधकानां सुसेव्यम्।
नखर निकरकान्तं मुद्रिका नूपुराद्यैः,
वर मुनि हृदि मध्ये योगयोगीश भाव्यम्॥

ॐ सिद्धि श्रीसर्वेश्वरी पदपद्मपराग मकरन्दास्वादित द्विरेफ स्फूर्तिस्फार फलकालभालालबाल तिलकावलीक वर विलसत् वियद्रसाधरणीधुरेन्द्र द्रुहिणपरहीन पटुतैक प्रभुतालताऽमुधा मुधावसुध ।ातलोत्तुङ्ग तमालतारुण्यतर सञ्चिताकुञ्चित मेचक कचान्वितमुख सुषमा-अपार नटवरमणिनागर दशरथ कुमार जानकी सुखसञ्चित भ्रमरो विजयतेतराम् ।।

राजभूत्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः स्वेन कर्मणा ।।
निमिः परम धर्मात्मा सर्वसत्त्ववतां वरः ।
तस्य पुत्रो मिथिर्नाम मिथिला येन निर्मिता ।।
प्रथमो जनको नाम जनकादप्युवसुः ।
उदावसोस्तु धर्मात्मा जातो वै नन्दिवर्धनः ।।
नन्दिवर्धनपुत्रस्तु सुकेतुर्नाम नामतः ।
सुकेतोरपि धर्मात्मा देवरातो महाबलः ।।
देवरातस्य राजर्षेर्वृहद्रथ इति स्मृतः ।
वृहद्रथस्य शूरोऽभून्महाबीरः प्रतापवान् ।।
महाबीरस्य धृतिमान्सुधृति सत्यबिक्रमः ।
सुधृतेरपि धर्मात्मा धृष्टकेतुः सुधार्मिकः ।।
धृष्टकेतोस्तु राजर्षेर्हर्यश्व इति विश्रुतः ।
हर्यश्वस्य मरुः पुत्रो मरोः पुत्रः प्रतिन्धकः ।।
प्रतिन्धकस्य धर्मात्मा राजा कीर्तिरथः सुतः ।
पुत्रः कीर्तिरथस्यापि देवमीढ़ इति स्मृतः ।।
देवमीढस्य बिबुधो बिबुधस्य महीध्रकः ।
महीध्रक सुतो राजा कीर्तिरातो महाबलः ।।

कीर्तिरातस्य राजर्षेर्महारोमा व्यजायत।
महारोम्णस्तु धर्मात्मा स्वर्णरोमा व्यजायत।।
स्वर्णरोम्णस्तु राजर्षे ह्रस्वरोमा व्यजायत।
ह्रस्वरोम सुतः श्रीमान् शीरध्वज इति स्मृतः।।
(श्रीमद्बाल्मीकिरामायणे)

तस्य पुत्री सुजवसुकुमारांकुरजिता सौम्या श्रीसीता राशिनामहेमलतिका। निमिसूर्यकुल चूड़ामणि सुनयना प्रियमाधुर्य मिश्रितैश्वर्यालंकारालंकृता निजपति परिचर्या विलासिनी जगदीशिनी शर्वरीशिनी परमपरमेश्वरी। स्वस्ति श्रीमत्सदाचाराचरण परिलब्ध गरिष्ठादि मुनिगण जेगीयमान यशश्शरच्चन्द्रकरधवलीकृत जगत्त्रयस्य गौतम गोत्रस्य गौतमाङ्गिर साप्यायेति त्रिप्रवरस्य श्रीमत्स्वर्णरोमवर्मणः प्रपौत्रीं १, श्रीमत् ह्रस्वरोमवर्मणः पौत्रीं २, श्रीमत् शीरध्वज वर्मणः पुत्रीं ३, प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये। स्वस्ति सुवासोभूषयोर्वरकन्ययोर्मंगलमास्ताम्। इति कन्यापक्षे वार त्रयंपठेत्।।

पाणिग्रहण

इयं सीता मम सुता सहधर्मचरी तव।
प्रतीच्छ चैनां भद्रं ते पाणिं गृहीष्व पाणिना।।

छ.- भयो पानि गहन विलोकि विधि सुर मनुज मुनि आनन्द भरैं ।।
सुखमूल दूलह देखि दम्पत्ति पुलक तन हुलस्यो हियो।
करि लोक वेद विधान कन्यादान नृप भूषण कियो।।
हिमवन्त जिमि गिरिजा महेसहिं हरिहिं श्रीसागर दई।

तिमि जनक रामहिं सिय समरपी विस्व कल कीरति नई।।
क्यों करै विनय विदेह कियौ विदेह मूरति साँवरी।
करि होम विधिवत गाँठि जोरी होन लागी भाँवरी।।

दो. जय धुनि वंदी वेद धुनि मंगल गान निसान।
सुनि हरषहिं वरषहिं विवुध सुरतरु सुमन सुजान।।

कन्यादान पद -१०६

धनि धनि सुनयनाजी के अंगनमां दुलहिन दुलहनमां।।
मिथिला के मान सरोवर मण्डप अति पावन सुन्दर,
ताही बिच हंसिन ओ हंसनमां।।
एक दिशिमौरिया लर बाढ़े, एक दिशि घूंघट पट काढ़े,
तरेतर नयना के छिटकनमां।।
दूनू के सजीवन मूरी भेल छथि सियाजी के चूरी,
सरसिज पर सरसिज के सुमनमां।।
फाटक विदेहक छतिया पागल 'सनेहक' गतिया,
कौने विधि गावैं पानि गहनमां।।

पद -११०

जँघिया चढ़ाय बाबा बैसला मण्डप पर बाबा करू न धीया दान हे।।
वर करकंज तर लली कर ऊपरताही में सोहत फूल पान हे।
गुरु वशिष्ठजी मन्त्र उचारथि मंत्र पढ़त श्रीराम हे।।
दूनू कुल के नाम धरावल अग्नि के साक्षी रखावल हे।
सब सखियन मिलि मंगल गावैं फुल बरसत देव बहु बार हे।।
सुसुकि सुसुकि रोवैं मातु हे सुनयना इहो बेटी छल मोर परान हे।
जाही बेटी लागि हम नटुवा नचौलौं सेहो बेटी भेल मोर विरान हे।।

चुपे रहु चुपे रहु मातु हे सुनयना इहे थिक जग व्यवहार हे।
हम कोना चुपे रहू सखि हे सहेलिया बेटी बिना कोना राखब प्रान हे।।

पद –१११

त्रिभुवन पति रामचन्द्र वर सखि मन रंजन हे।
ललना हे दुलहिन सिया सुकुमारि पड़ल गठबन्धन हे।।
प्रेम फाँस थिक बन्धन आमक कंगन हे।
ललना हे कनकवेलि सिया ताग सुमान रघुनन्द हे।।
वर दुलहिन एक संग वैसल सुभ आसन हे।
ललना हे सुरगन बरसत फूल बजत नभ बाजन हे।।।
'लतिका सनेह' सोहागिन गावति मंगल हे।
ललना हे युगे युगे जीवे चारु दम्पत्ति मिथिला सुमंगल हे।।

भाँवरी

कुँअर कुँअरिकल भाँवरि देही। नयन लाभ सब सादर लेही।।
जान न बरनि मनोहर जोरी। जो उपमा कछु कहौं सो थोरी।।
राम सीय सुंदर प्रतिछांही। जगमगात मनि खंभन्ह मांही।।
मनहुं मदन रति धरि बहुरूपा। देखत राम विआह अनूपा।।
दरस लालसा सकुच न थोरी। प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी।।
भए मगन सब देखिनहारे। जनक समान अपान विसारे।।
प्रमुदित मुनिन्ह भाँवरि फेरी। नेग सहित सकब रीति निवेरी।

पद –११२

चारों दुलहा देहिं भामरिया ए, संग सोहति दुलही नागरिया ए।।
श्याम गौर गौर श्यामा चारों जोड़ा जोड़िया,हरे हरे होत चहुँओरिया।।

शिरनि पै सोहै मणिन मौर मौरिया,दामिनि की छवि छीनै छोरिया।
रतनारी कजरारी अजब अँखरिया,लखितहिं करे बेखबरिया।।
अंचल चदरिया में परी है गठरिया,बांधे हैं कि बूटी बस करिया।।
नवरंग मणिन की सुपली सोहरिया,लावा छिरियावैं भरि भरिया।।
उमगि उमगि गावैं अलिगन गरिया, सुख सरसत बेसुमरिया।।
जयति जयति जय जय होत सोरिया, सुर करैं सुमन की झरिया।।
परैं मनि खम्भन्हि में दम्पति छहरिया,जागै जोति जगरमगरिया।।
मानो रति पति जानि पितु महतरिया, प्रगटि दुरत बेरि बेरिया।।
फूली न समाति लखि 'मोदिया' किंकरिया,ललीलाल लखनि लजोरिया।।

पद -११३

ई छैला अवध के अन्हरिया, हमार सिया पूनम अँजोर।।
सिय छवि छाँह छुअत वसनन्हि छनि, हरियर होत सँवरिया।।
घूँघट ओट छटा छिन निरखत, विसरत देन भँवरिया।।
सहमि सकुचि झुकि उझकि चकित चलि, चाहत छवि दृग भरिया।।
मनि खम्भन्ह प्रतिबिम्ब कबहुं लखि, टारत नाहिं नजरिया।।
भाँवर देत जोरि अनुपम छवि, लखि 'करील' बलिहरिया।।

सिन्दुर दान

राम सीय सिर सेन्दुर देहीं। नयन लाभ सब सादर लेहीं।।
अरुन पराग जलज भरि नीके। ससिहिं भूष अहि लोभ अमीके।।

पद-११४

कौने नगर के सिन्दुरिया सिन्दुर बेचे आयल हे।

आगे माइ कौने नगर के कुमारी धीया सिन्दुर बेसाहल हे।।
अवध नगर के सिन्दुरिया सिन्दुर बेचे आयल हे।
मिथिला नगर के कुमारी धीया सिन्दुर बेसाहल हे।।
कौने रंग रसिया जे बरवा से सिन्दुर चढावल हे।
कौने धिया वारी सुकुमारी से सिन्दुर सँवारल हे।।
श्याम रंग रसिया जे बरवा से सिन्दुर चढ़ावल हे।
सिया धीया वारी सुकुमारी से सिन्दुर सँवारल हे।।
जय जय होत चहुँओर सुमन बरसावल हे।
'कदमलता' पद गावल सुनि सुख पावल हे।।

पद-११५

प्रिय पाहुन सिन्दुर दान करू।
ई अवसर नहिं लाज करक थिक एखनन किछु हठ मान करु।।
लिय सिन्दुर कर कमल मुदित चित हमर कथा किछु कान धरु।
लग्न मुहूर्त्त सुमंगल एखन अब न विलम्ब महान करू।।
गाइनिगन अहूँ तानि मधुर धुनि शुभ शुभ मंगल गान करू।
'दामोदर' विधि आजु मुदित चित वर कन्या कल्यान करू।।

दूर्वाक्षत

ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम् दोग्ध्रीधेनुर्वोढ़ाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्ध्रिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा सभेयो युवाऽस्य जयमानस्यव्वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नः ओषधयः पच्यन्ताम्। योगक्षेमो नः कल्पन्ताम्।।

मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रुणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।

चुमावन पद - ११६

दुलहा दुलहिन के धीरे चुमा दियौन हे, आनन्द रस वरषा दियौन हे।।
रतन मणिन केर डाला बनाओल, दुभि औ धान सँ भरा दियौन हे।।
दूर्वाक्षत कर लीय मुनिन्ह सब, वेदक मन्त्र सुना दियौन हे।।
डाला परसि परसि दम्पति के, मंगल गावि चुमा दियौन हे।।
चिर जीवथु प्रीतम 'पटरानी' सब मिलि आशीष मना दियौन हे।।

चुमावन पद - ११७

चुमावत हो ललना धीरे धीरे।
कंचन थार सम्हार सुआरती घुमावत हो ललना धीरे धीरे।
मंगल गाइ सुनयना जी आई चुमावत हो ललना धीरे धीरे।।
सरहोज आई महल से दौरी बजावत हो बिछिया धीरे धीरे।
'प्रेम' सहित सेकि सेकि कपोलन रिझावत हो दुलहा धीरे धीरे।।

मण्डप की झाँकी

बहुरि वशिष्ठ दीन्ह अनुसासन। वर दुलहिनि बैठे एक आसन।।
छ.- बैठे बरासन राम जानकी मुदित मन दशरथ भए।
तन पुलक पुनि पुनि देखि अपने सुकृत सुरतरु फल नए।।
भरि भुवन रहा उछाह राम विवाह भा सबहीं कहा।
केहि भाँति वरनि सिरात रसना एक यह मंगल महा।
तब जनक पाइ वशिष्ठ आयसु व्याह साज सँवारिकै।

मांडवी श्रुतकीरति उरमिला कुँवरि लई हँकारिकै।
कुसकेतु कन्या प्रथम जो गुन सील सुख सोभा मई।
सब रीति प्रीति समेत करि सो व्याहि नृप भरतहिं दई।।
जानकी लघु भगिनी सकल सुन्दरि सिरोमनि जानिकै।
सो तनय दीन्हीं व्याहि लखनहिं सकल विधि सनमानिकै।।
जेहि नाम श्रुतकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी।
सो दई रिपुसूदनहिं भूपति रूप सील उजागरी।।
अनुरूप बर दुलहिनि परस्पर लखि सकुच हियँ हरषहीं।
सब मुदित सुन्दरता सराहहिं सुमन सुरगन बरषहीं।।
सुन्दरीं सुन्दर बरन्ह सह सब एक मंडप राजहीं।
जनु जीव उर चारिउ अवस्था विभुन सहित विराजहीं।।

दो. मुदित अवधपति सकल सुत बधुन्ह समेत निहारि।
जनु पाये महिपाल मनि क्रियन्ह सहित फल चारि।।

मण्डप की झाँकी पद -११८

सोभित सीताराम कनक मण्डपतरे।
सिर सोने को मौर मंजु मुक्ता गरे।।
परसत अमल कपोल सुमुक्ता मौर के।
राजिवलोचन लोल कमल मानो भोर के।।
सुरंग चूनरी के निकट पीत पट छुइ रह्यो।।
मनहुँ अरुन घन मध्य चपलता चुइ रह्यो।।
सिय भूषण प्रतिबिम्ब राम छबि उर धरे।

मनहुँ जमुन जल मध्य दिव्य दीपक बरे।।
राम भुजा के निकट सीय भुज यों लसे।
मरकत मनि कर खंभ मनहुँ कंचन कसे।।
राम भये घनश्याम सिया भइ दामिनी।
मुनि भये चन्द चकोर चकित भइ भामिनी।।
राम भये तन गौर सिया भई साँवरी।
सारद सी बुधिबन्त बधू भइ बाबरी।।
पुष्पन वरसत मेघ मेदिनी थर हरे।
होत जनकपुर व्याह राम भाँवरि फिरे।।
सुर नर मुनि आनन्द सुमन बरषा करे।
सिव ब्रह्मादिक देव मुदित जय जय करे।।
राम सिया को ध्यान सदा शंकर धरे।
ब्रह्मा रूप निहार इन्द्र पूजा करे।।
यह छवि युगलकिशोर सु मुनिजन ध्यावहीं।
लखि लखि विमल विनोद वेद जस गावहीं।।
जो यह मंगल गावहिं गाय सुनावहीं।
परसि सिया पद पद्म परम पद पावहीं।।
तुलसी सीताराम सदा उर आनिये।
राम भजन बिन जन्म वृथा करि मानिये।।

पद -११६

नारि सुभग मण्डपतर मंगल गावहीं।
सुनि सुनि सीताराम बहुत सुख पावहीं।।

काल करम गति छेकि इहै छवि नित रहौ।

निरखि निरखि सब लोग महा सुख के लहौ।।

राम केशरिया पट सजे सिया लाल को।

दुऔ प्रीति के रंग रंगे यहि चाल को।।

राम बसत नित सीय में राम में सीय हैं।

दोउन के पट कहत दोऊ एक जीय हैं।।

प्रथम चऊथ और बीचके अक्षर जोरि कै।

ए दोउ तारक सीम छनत रस घोरि कै।।

मिथिला जाउ अवध कि अवध इहाँ आवऊ।

दिन विछोह कर हम कहँ विधि न देखावऊ।।

सरवस राज अरपि नृप राखहिं राम के।

नाहिं त होइहैं विदेह जथारथ नाम के।।

नित विहार सियराम को दोऊ ठाऊँ में।

'देव' करिहिं सब भाँति कुशल दोउ गाऊँ में।।

पद -१२०

चारों दुलह चारों दुलहिनि बैठे मण्डपतर हे।

जगमग जगमग जोति निरेखो नयन भर हे।।

मौरिया की झालर झलकत मुख छवि छलकत हे।

सकुचि परस्पर चितवत हुलसत पुलकत हे।।

बड़का दुलह घनश्याम दुलहि जनु दामिनी हे।

मझिला दुलह ज्यों तमाल कनकलता कामिनी हे।।

सँझिला दुलह तन गौर सु मनहुँ निशाकर हे।
दुलहिनि साँवरि रंग अधिक सुषमा भर हे।।
अति कोमल लघु दुलह दुलहिं बेलि जन फबि रहि हे।।
कनक कदलि ढिग श्याम बेलि जनु फबि रहि हे।।
नील पीत रंग हिलि मिलि औरे रंग सरसत हे।
सकल वराति सराति हरित रंग दरसत हे।।
धन्य भाग रघुनन्दन पायउ सिय तिय हे।।
हम सब धन्य धन्यतर वर सुख लूटेउ हे।
प्राननाथ के साथ नात भल जूटेउ हे।।
कोउ छवि लखि तृण तोरति राई लौन वारति हे।
कोउ सखि दम्पत्ति मूरति हिय बिच धारति हे।।
निरखि सुमन सुर बरसत हरषत तरसत हे।
'मोदलता' तन मन वारि दम्पत्ति पद परसत हे।।

पद–१२१

दूलह राम सीय दुलहि री।
घनदामिनी वर वरन हरन मन सुंदरता नख शिख निबही री।।
ब्याह विभूषन बसन विभूषित सखि अवली लखि ठगि सीरही री।
जीवन जनम लाहु लोचन फल है इतनोह लह्यौ आजु सही री।।
सुखमा सुरभि सिंगार छीर दुहि मयन अमियमय कियो है दही री।।
मथि माखन सियराम सँवारे सकल भुवन छवि मनहुँ मही री।।

'तुलसीदास' जोरी देखत सुख सोभा अतुल न जाति कही री।
रूप रासि बिरची विरंचि मनो सिला लवनि रति काम लही री।।

पद –१२२

राजति राम जानकी जोरी।
श्याम सरोज जलद सुन्दर बर दुलहिनि तड़ित वरन तनु गोरी।।
व्याह समय सोहति वितान तर उपमा कहुँ न लहति मति मोरी।
मनहुँ मदन मंजुल मंडप महँ छवि सिंगार सोभा इक ठोरी।।
मंगलमय दोउ अंग मनोहर ग्रथित चूनरी पीत पिछोरी।
कनक कलश कहँ देत भाँवरी निरखि रूप सारद भई भोरी।।
इत वशिष्ठ मुनि उतहिं सतानंद बंस बखान करैं दोउ ओरी।।
इत अवधेश उतहिं मिथिलापति भरत अंक सुखसिंधु हिलोरी।।
मुदित जनक रनिवास रहस वस चतुर नारि चितवहिं तृन तोरी।।
गान निसान वेद धुनि सुनि सुर बरसत सुमन हरष कहैं कोरी।।
नयनन को फल पाइ प्रेम वस सकल असीसत ईस निहोरी।
'तुलसी' जेहि आनंद मगन मन क्यों रसना वरनै सुख सोरी।।

पद–१२३

रतन जड़ित मण्डपतर राजत दुलहा श्याम सलोना री।।
सिर सुन्दर सोबरनि मनि सेहरा श्रवननि झलक तरौना री।
श्याम बदन पर अलकें झलकत मानो नागिनि के छौना री।।
वाम अंग सोभित सिय सुंदरि अंग अंग छवि मन हरना री।
'प्रियासखी' ऐसी मृदु जोरी अनत नहीं कहीं होना री।।

पद -१२४

रघुवर दूलह दुलहिनि जानकी।
नील पीत जलजात सुभग अंग अंगन अति सुख मान की।।
कनक महामणि मौर मनोहर चन्द्रवदन सुख खान की।
जनु शृँगार सख्यगिरि ऊपर उग्यो जोति परभान की।
जावक चित्र पगन मेहदी कर अंजन दृगन अंजान की।
देत भामरी कनक कलश कहुँ संग लिये मन प्रान की।।
जय धुनि मंगल गान कुलाहल पुर नभ बाज निसान की।
बारहिं विविध सुमन सुर संकुल नाचहिं तिय विबुधान की।।
पुर नभ के नर नारि मगन मन विसरी सुरति अपान की।
'सूरकिशोर' सिय भाग प्रसंसत भई वधू कुल भान की।।

पद -१२५

आइ सुनैना माइ के अँगना में झाँकी झमके।
मणिमय रचना देखि चकित चित विधियो के मन थमके,
चारि दुलह दुलहिन मण्डप तर अनुपम रौनक रमके।।
माथे मौरी मौर मनोहर, जगमग जगमग जमके,
जड़ित चूनरी पीताम्बर पट अंग विभूषण चमके।
रामलला छथि श्याम सघन सिया दुलहिन दामिनि दमके,
भरतलाल छथि नील गगन सन माण्डवी प्रभा किरण के।।
लखन शत्रुहन अपरूप दुलहा जनु अनमोल रतन के,
श्रुतिकीरति उर्मिला नीलमणि दिव्य दमक दुलहिन के।।
नागरि मंगल गान करै छथि सुफल जनम जीवन के,
रंग विरंगक बाजन बाजय द्वार नगाड़ा धमके।।

शोभा सिंधु अपार अलौकिक अकथ करत वर्णन के,
'पटरानी' आनन्द मगन मन देखि विआह बहिन के।।

पद -१२६

श्रीकिशोरीजी के अंगना विलोकू बहिना।
छवि शशि मुख राम छवि निधि जानकी, रचल विधना,
कने ओम्हरो निहारू तीनू जोरी तहिना।।
माण्डवी चकोरी संग भरत चकोरवा विराजे दहिना,
श्रुतिकीर्ति संग शत्रुहन शोभे ओहिना।।
बबुआ लखन संग शोभे उरमिला दाइ उपमा विना,
सखि बूझू जेना अंगूठी में शोभे नगीना।।
कहथि 'सनेहलता' मिथिला में राखू तीन सौ साठियो दिना,
एहे पंचमी के तिथि अगहन महीना।।

पद -१२७

आई बिधना के कतेक गुनमां गाबू हे सखी।
जेहने अपन किशोरी, शोभा सिन्धु सिय गोरी,
तेहने लागि गेल जोरी, नयन जुड़ाबू हे सखी।।
जेहने माण्डवी हँसोरी, सियमुख चन्द्र की चकोरी,
तेहने भरत विभोरी, देखि सुख पाबू हे सखी।।
जेहने धीया उरमिला, तेहने श्रुतिकीर्ति सुशीला,
तेहने लखन शत्रुहन हिय में बसाबू हे सखी।।
देखि झाँकी सखी 'सनेह' सुधि बुधि भेलि विदेह,
सब मिलि राखू नित नेह जनि बिसराबू हे सखी।।

पद -१२८

सखि पश्य कोशलकान्त सुखद कुमारमति सुकुमारकम्।
मैथिल निवास विलास विलशत मदन मनोपहारकम्।।
मणि मण्डपे सीता युतं सुषमा भरं सीता वरम्।
सुविवाह कर्म विधानमति कुर्वाणमद्भुतताकरम्।।
मणि मुकुट पीताम्बर सुमध्य मुखारविन्दमनिन्दितम्।
सेन्दुर सुघन मस्तक दिवामणिमिव तड़िद्गण वन्दितम्।।
किंचित्कटाक्ष विकास विक्षित जानकी सुखमा सुखम्।
गुरुजन निकट लज्जा वशंगतमधो भावित शशि मुखम्।।
जनकात्मजार्पित दृष्टि कंकण कलितकर धृत चन्दनम्।
'रघुराज' सुखित समाज शोभित सानुजं रघुनन्दनम्।।

पद -१२९

रामचन्द्र दुलहा सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
ना जानी कौशल्या माइके कोखे गुण कि रामचन्द्र रूपे गुण हे।।
माथे मणि मौरिया सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
ना जानी मलिनियाँ के बनवे गुण कि रामचन्द्र माथे गुण हे।।
चन्दन दुलहा के सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
ना जानी पंडितजी के हाथे गुण कि रामचन्द्र भाले गुण हे।।
कुण्ठा दुलहा के सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
ना जानी सोनरवा के गढ़े गुण कि रामचन्द्र कण्ठे गुण हे।।
अंग में के जोड़वा सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
ना जानी दरजिया के बनवे गुण कि रामचन्द्र अंगे गुण हे।।

चरण महावर सुहावन लागे अति मनभावन लागे है।
ना जानी हजमिनियाँ के लगावे गुण कि रामचन्द्र चरणे गुण है।।

पद–१३०

मंडप बिच जोरी चमकि रही।
मरकतमणि संग जाल रूप छवि घन-बिच दामिनि दमकि रही।
सुधा सार रस प्रेमसिन्धु लखु मिथिला छवि छुइ छलकि रही।।
तरु तमाल लहि कनकलता जनु लिपटि रही तउ ललकि रही।
चिरजीवैं यह अविचल जोरी 'योगेश्वर' अभिलाष यही।।

पद –१३१

दुलह दुलही की छवि बांकी मुबारक हो मुबारक हो।
अनूपम सखि जुगल झाँकी मुबारक हो मुबारक हो।।
लसै शिर मौर मौरी ब्याह भूषण औ बसन दोउ तन।
न उपमा मिलि सकै जाकी मुबारक हो मुबारक हो।।
अमित रतिनाथ छै लज्जित निरखि सियवर सलोने को।
त्यौं रति लखि जनकजा की मुबारक हो मुबारक हो।।
जिन्हें लखि जोगिजन तरसैं बिराजैं मध्य मंडप पर।
अहै बड़िभाग मिथिला की मुबारक हो मुबारक हो।।
मनोहर जुग्म शशि को त्यागि पल देखैं चकोरी सी।
ये आँखैं 'नेह लतिका' की मुबारक हो मुबारक हो।।

पद –१३२

ये जोरी चारु चन्दा की जिये युग युग मुबारक हो।
लसैं सिर मणिन के सेहरा तिलक युत खौर हो गहरा।

रसीले नैन में कजरा जिये युग युग मुबारक हो।।
पीत पट चूनरी छोरी बँधी हो गाँठि रस बोरी।
सुछबि निधि श्याम ओ गोरी जिये युग युग मुबारक हो।
पिया कुण्डल अलक प्यारी ओ अरुझी हो छटा न्यारी।
सखीं सब जाहिं बलिहारी जिये युग युग मुबारक हो।।

पद -१३३

सियाराम की बांकी जोरी मुबारक।
ललाई लली की लला में चमकती,
घटा बीच दामिनि सी जोरी मुबारक।।
शरदचन्द्र पूरण कलानिधि ललन मुख,
जनकनन्दिनी चख चकोरी मुबारक।
युगल रूप ए मोहते एक को एक,
दो तरफा की ए छोड़ा छोड़ी मुबारक।।

आरती पद -१३४

रंगीली आरती करू नीकी, नवलवर नौशय दुलहिनीजी की।
पगतल ललित संयुक्त महावर, रंजित नख अवली की।।
वसन वसन्ती सुकटि लसन्ती सारी मोल घनी की।
मुख सु छवी की सींव बनी की मुकुकनि वृष्टि अमी की।।
मौर मौरी की छहर छोरी की दामिनी दुति करैं फीकी।
'मोदअली' की सरबस ही की झाँकी सिय सिय पी की।।

पद -१३५

गाओ गाओ री, प्रिया प्रीतम की आरती गावो।

आस पास सखियाँ सुख दैनी, सजि नव सप्त सिंगार सुनैनी,
बीन सितार लिये पिक बैनी, गाइ सुराग सुनाओ।।
अनुपम छवि धरि दम्पति राजत, नील पीत पट भूषण भ्राजत,
निरखत अगनित रति छवि लाजत, नैनन को फल पाओ।।
नीरज नैन चपल चितवन में,रुचिर अरुणिमा सुचि अधरन में,
चन्द्र बदन की मधु मुसुकन में, निज नयना अरूझाओ।।
कंचन थार सँवारि मनोहर, घृत कपूर सुभ वाति ज्योति कर,
मुरछल चँवर लिये,रामेवश्वर हरषि, सुमन बरसाओ।।

पद -१३६

जयति श्रीजानकिवल्लभ लाल, करूँर तब आरती होऊँ निहाल।।
शीश पर क्रीट मुकुट झलकैं, कपोलन पै झुलैं अलकैं,
कान में कर्णफूल चमकै, नैन कजरारे, मोहनियाँ डारे,
नयन रतनारे, सुचन्दन कुम कुम केशर भाल।।१।।
मधुर अति मूरति श्यामल गौर, सु छवि जोड़ी राजत इक ठौर,
नहीं है उपमा कोई और, निरखि रति लजैं, मैन मद तजैं,
अंग सुभ सजैं, सु भूषण वर मुक्ता-मणि-माल।।२।।
परस्पर दोउ चकोर दोउ चन्द, प्रिया प्रिय अनुपम सुषमाकन्द,
प्रेम हिय छायो परमानन्द, मन्द मृदु हँसन, रुचिर दुति दसन,
मनोहर बसन, दोऊ सोहैं गलबहियाँ डाल।।३।।
बजत बीना सितार सुमृदंग ,सबै मिलि गावत सहित उमंग,
होत पुलकायमान अंग अंग, रंग जब चढ़त,प्रेम हिय बढ़त,
नयन जल कढ़त, मधुर स्वर गावत दै दै ताल।।४।।

स्वामिनी स्वामी कृपा अगार, प्रणतजन 'रामेश्वर' आधार,
जोड़िकर बिनवौं बारम्बार, कछू नहिं बनत, नेम तप बरत,
रहौं पद निरत, यही वर दीजै परम दयाल।।५।।

पद - १३७

युगल छवि की आरती करूँ नीकी।
गौर वदन श्रीजनकलली की, श्याम वरन सिय पी की।।
मुकुट चन्द्रिका में द्युति राजै, अगनित सूर्य ससी की।
सुन्दर अंग अंग में छवि है, कोटिन काम रती की।।
युगल रूप में सबही पटतर, उपमा हो गई फीकी।
'रामेश्वर' लखि ललित जुगल छवि, हुलसत हिय सबही की।।

पद - १३८

सुन्दर वदन विलोकि के नयनन फल लीजै।
जानकिवल्लभलाल की सखि आरती कीजै।।
कुण्डल कलित कपोल पै छुटि अलक बिराजै।
कण्ठा कण्ठ सुहावनो गजमुक्ता राजै।।
पाग बनी जड़ितार की दुपटा जड़ि तारी।
पटुका है पचरंग की मणि जड़ित किनारी।।
सियाजू की तन चुनरी लसैं जड़ि जोति किनारी।
'रसिकअली' की स्वामिनी अद्‌भुत छवि भारी।।

पद -१३९

सिया सिया वल्लभलाल की सखि आरती करिये।
दम्पति छवि अवलोकि कै हिय नयनन धरिये।।

अंग अनूप सुहावनो पट भूषण राजै।
नेह भरे दोउ रसिक सुभग सिंहासन राजै।।
मन्द मन्द मुसुकाय के सिय गुलभुज धारे।
ललकि लई उर लाय प्राण प्रीतम निज प्यारे।
ललनागण बड़भागिनी लोचन फल पावैं।
सेवहिं भाव बढ़ाय के नित नव गुण गावैं।।
चँवर छत्र कोउ लिये बाजने बिपुल बजावैं।
'प्रेमलता' उर उमगि सुमन नचि नचि बरसावैं।।

द्वार छेकाई पद - १४०

द्वार की छेकाई नेग लूँगी मनभाई हाँ तब जाने दूँगी,
कोहवर सदन सुहाई।।
सकुच विहाय दीजै दीनी है जो माई, हाँ तब जाने दूँगी।।
चाहे सोई मानिये जो कहूँ समुझाई, हाँ तब जाने दूँगी।।
कीजै मेरे भैया से निज बहिनी की सगाई, हाँ तब जाने दूँगी।।
'मोद' नहीं तो लीजै सिया शरणाई, हाँ तब जाने दूँगी।।

पद -१४१

छाड़ब नाही दुआरी हो सुनिये रघुनन्दन।।
जबहीं कोहबर चले रघुनन्दन सखियन छेकल दुआरी।
नेग दिये बिना जो पग धरिहो दूँगी मैं गारी हजारी।।
जो नहिं राखत साथ पदारथ बेचो बहिनी महतारी।
सकुचत 'जनहरिनाथ' न बोलत विहँसत अवध बिहारी।।

कुल देवता पद - १४२

यह आपकी कुल देवता इन्हें सादर शीश नवैये।
करजोरि सु विनय सुनैये, करुणा पर बलि बलि जइये,
अब नेकु न विलम्ब लगैये।।
शुभ आसन दै बैठैये, पग धो जल शीश चढ़ैये,
मधु मेवा भोग लगैये।।
इत भेजी हैं आपकी मइये, आय देखन चारों भइये,
'अलि मोद' सुभाग्य मनैये।।

जुआ पद - १४३

जुआ खेलो कुमर वर चार बाजी लगाइ के।
जो तुम जीतो अवध में चलिहौं, लोक लाज कुल छाड़ि,
सिय संग उमगाइ के।।
जो हारी दीजिये मेरे भैया को, करि मंगल उपचार,
बहिनी निज सगाइ के।।
बिहँसि बिहँसि कौड़ी कर भाँजै, निज निज दाँव सँभार,
सुख रस सरसाइ के।।
खेलत 'मोद' अजित वर हारे सखियन दीनी हहार,
ताली बजाइ के।।

पद -१४४

हे चारो दुलहे, सम्हलि कौड़ी खेलो।
बाजी की बातें प्रथम तय कर लो पीछे न कीजो झमेलो।।

जौ हारे मिथिलानी कदाचित दासी बना संग ले लो।
अगर आप हारे रघुनन्दन मिथिला में रहु बनि चेलो।।
विहँसि विहँसि कौड़ी फेकन लागे, जीते अली अलबेलो।
'स्नेहलता' कर पकड़ि ललन के, बोली की बाजी देलो।।

बाती मिलावन पद -१४५

नौशय चारों नवल वर कोहबर राजहिं हे।
जुरि रही अलिन समाज हास्य रस छाजहिं हे।।
सोने की दिअरा नगनजरि रेशम बाति हे
कनक थार महँ बारि दुइ लाई रंग राति हे।।
लालन यह दोउ दीपक एक संग जोरिये।
याको अमित प्रभाव न जानिये थोरिये।।
जौं यह दोनों टेम आप कर जूटिहैं।
दम्पति चारु सनेह न कबहूँ टूटिहैं।।
सुनि मुख डारि रूमाल हँस्यो दृग बाँकि कै।
सखियन भयउ निछावरि छवि रस छाकि कै।।
कोउ कहि बिनु बोले आवत नहिं सकुचाय जू।
बातिहिं बाति मिलावत काहे लजाय जू।।
लाल कह्यो हँसि भौरहिं कौन बुलावहीं।
शोभा करन प्रसून आप चलि आवहीं।।
दीपकला भल जानहिं 'मोद' सुवाम हैं।
मनसों मनहिं मिलावन मेरो काम है।।

महुअक (लहकौरी) पद -१४६

लहकौरि करत पिय प्यारी।
जनक नगर की अली चतुर सब गावत रस की गारी।
लक्ष्मीनिधि प्रिया चतुर शिरोमणि सुसमै हृदय बिचारी।
बोली सुनहु प्राण मम वल्लभ हम हैं ओर तुम्हारी।।
तुम जीतौ तब सखी सिय जीतौ जो कदापि हैक हारी।
तब हम तुम्हें जीतिहैं सियजू फुर कहि दोउ हिय धारी।।
प्रेम हार निज निज घातैं करि पकर्‌यो अवध बिहारी।
तब सिय ललकि भौंह करि बांकी मन हरि गहि सुकुमारी।।

पद -१४७

आज न लजाओ मधुर मिलनवां हे।
मीठी मीठी खीर खाओ सजनी-सजनवां हे।।
मधुर मधुर खीर प्रीति के कारणवां हे।
धनियां खिलाये खाये पिया जीवन धनवां हे।।
मुसुकि मुसुकि बोले सरहोज बचनवां हे।
धनी हाथे खीर खाये, लाज न नयनवां हे।।
पहिले खिलावो खीर धनी के सजनवां हे।
प्राण प्राण एक आज मधुर जीवनवां हे।।
हँसि हँसि साली कहे सुनो जी पहुनवां हे।।
दोनों एक साथ खाओ तोड़ि के बंधनवां हे।।
सखियन गावैं गीत प्रीति के कारणवां हे।
दुई तन एक प्राण सजनी सजनवां हे।।

पद -१४८

दुलहा किया आहाँ रूसल छी ससुरारी में
खीर परसल थारी में ना।।
व्यंजन भाँति भाँति तैयारी जेमू अवधबिहारी,
एहन स्वाद ने पायब कौशल्या सोहारी में।।
लीय निमकी अँचार जेमू अवध सरकार
एहन स्वाद ने पायव सुमित्रा तरकारी में।।

पद -१४९

खीर खैयो ने दुलहा लजैयौ एना।।
सारी छथि सोझा सरहोजि छथि सोझा,
छति विधकरी करथि विधि ना।।
एकटा हमर बात मानू यो रघुवर,
आज केर खीर नै करियौ अनादर,
महुअक के थारी होयत सपना।।
'रमण' सुमन केर मान आइ रखियौ,
महुअक खीर आहाँ कनिको चिखियौ,
अहीं कहू हम मनैयो कोना।।

कोहवर हास्य पद - १५०

लखि कौतुक घर में नारि हँसि हँसि पूछति हैं रघुवर से।
तुमहिं जगत को सार कहहि मुनि कहि न सकति हम डर से।।
तुम नहिं पुरुष न नारि कहहिं श्रुति खेलहु खेल मकर से।
सो लखि परत मकर कुण्डल से और किशोर उमर से।।

दशरथ गौर कौशल्या गोरी तुम श्यामल केहि घर से।
दोऊ के हरि ध्यान प्रगट भये अस हमरे अटकर से।।
व्यङ्ग चतुरता गारी सुनिके देखा राम नजर से।
भई कृतारथ 'देव' मनावहिं जनि ए जाहिं नगर से।।

पद -२५१

कोहवरवा की शोभा अपार है, जहाँ खासा नवल दरबार है।।
मदमाती सखी इठलाती, मुसुकाती हुई बलखाती,
बिच बैठे कुमर वर चार हैं।। को.।।
कोउ पानो के बीड़े खवाती, कोउ लालन से आँखे लड़ाती,
करती महफिल में नखड़े हजार हैं।। को.।।
कोउ मीठी सी गाली सुनाती, कोउ मीठी दिलग्गी उड़ाती,
तेरे कुल का कवन व्यवहार है।। को.।।
कोउ पूछे मुसुकि दय तारी, कहु को थी सगर की नारी,
कैसे व्यानी वो साठि हजार है।। को.।।
सुनि संसय लगे बड़भारी, तेरी बहिनी बेकहल छिनारी,
कैसे बाबाजी उनका भतार है।। को.।।
यह कोहवर 'सनेहलता' गावे, मिथिलानी महा सुख पावे,
हम लालन के लालन हमार हैं। को.।।

पद -१५२

श्री कोहवरवा घरवा राजैं बरवा चार गुइयाँ।
हँसनि हँसावनि की हो रही बहार गुइयाँ।।

कमल कली सी चहुँदिशि नव नार गुइयाँ।
बीच में बिराजे अलवेले चारों यार गुइयाँ।।
चमर चलावती छवीली छबि वार गुइयाँ।।
बिरिया खवावती सुगंध बहु डार गुइयाँ।।
झूमि झूमि झाँकें सब झाँकी मजेदार गुइयाँ।।
हरसत सुख सरसत बेसुमार गुइयाँ।
बोली सिद्धि प्यारी सुनो अवध व्यवहार गुइयाँ।।
होत रघुवंश में पुरुषो गर्भाधार गुइयाँ।
रहे युवनाश्व एक राजा गुणागार गुइयाँ।।
जाय मानधाता सुनि परेउ हहार गुइयाँ।।
सुदुमन भये इला कुमरि उदार गुइयाँ।
कुलटा पुरुरवा जनाइ करि जार गुइयाँ।।
तीस दिन तिया रहैं पुरुष तीस वार गुइयाँ।
सुनते हँसेउ सब दै दै ठहकार गुइयाँ।।
सुमति सयानी एक भई दिमागदार गुइयाँ।
व्यानी एक बारहीं में साठि हजार गुइयाँ।।
शान्ता छिनारी जोग भेटे ना भतार गुइयाँ।
तपसी के गर बांधे जानत संसार गुइयाँ।।
अवध की तिया सब अतिहिं खेलार गुइयाँ।
पायस से पैदा किये 'मोद' प्राणाधार गुइयाँ।।
सकल छबीली छवि छकि भई न्योछार गुइयाँ।
परानन्द फूली भूली अपनी परार गुइयाँ।।

पद –१५३

राम लखन सन सुन्दर वर के जनि पढ़ियौन केव गारी हे।
केवल हास विनोदक पुछियौन उचित कथा दुइ चारी हे।।
प्रथम कथा ई पूछियौन सजनी कहता कनेक विचारी हे।
गोरे दशरथ गोरी कौशल्या भरत राम किय कारी हे।।
सुनु सखि एक अनुपम घटना अचरज लागत भारी हे।
खीर खाय बालक जनमौलनि अवधपुरी की नारी हे।।
अकथ कथा की बाजू सजनी रघुकुल के गति न्यारी हे।
साठि हजार पुत्र जनमौलनि सगरक नारि छिनारी हे।।
'स्नेहलता' किछु आब न कहियौन एतवे करथि करारी हे।
हँसी खुशी मिथिला से जयता भेजि देता महतारी हे।।

पद –१५४

हिनकर पक्ष आब हम करबैन्ह अहाँ धुसइथियैन्ह हिनका की।
हमर अपन केहनो छथि पाहुँन ताइ सँ मतलब अनका की।।
अपन वस्तु पर अपन खुशी थिक अछि कानून जहाँ ताकी।
अपन बहिनि के बेचिये देलनि ताइ सँ मतलब अनका की।।
साठि हजार बियइलथिन पुरखिन किन्तु करइ छी निन्दा की।
दुख सुख जनलनि जे जनमैलनि ताइ सँ मतलब अनका की।।
गट गट गारि सुनुथि सब लालन मगर मरम्मत करता की।
'स्नेहलता' मुसुकाथि लजायल असल बात में बजता की।।

पद –१५५

हँसि हँसि सुन्दरी सहेली सियाजी के घेरि घेरि वैसली,
आब की की देब हमरा बताबू हे लली।।